❑ परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य रौ इतियास : कूंकूं पगल्यां सूं आभै तांई

देस अर समाज री सांची साख भरै उठै रौ साहित्य। साहित्य समाज री आरसी होवै। समाज में घट्योड़ी सगळी घटनावां अर थितियां रौ वरणन साहित्य पेटै करीजै। किण बगत में प्रदेस री सामाजिक, राजनीतिक, आरथिक अर सांस्कृतिक दसावां कांई ही ? इणरौ खुलासौ करै उठै रौ साहित्य। आ बात ई चावी कै जिणरौ साहित्य सांवठौ अर सिमरथ होवै, वौ देस–समाज ई सिमरथ होवै।

राजस्थानी पद्य–साहित्य री विसय–वस्तु, प्रवृत्तियां, भासा अर सैली री ओळखाण खातर साहित्य रा इतिहास री कूंत करणी घणी जरूरी है, क्यूंकै हर अेक जुग री आपरी न्यारी सामाजिक, सांस्कृतिक अर साहित्यिक थितियां होवै। समाज रा ढब अर ढाळा रै मुजब साहित्यकार रचना करै। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ बगत न्यारा–न्यारा विद्वानां–– डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया अर पद्मश्री डॉ. सीताराम लाळस आद आप–आपरी दीठ सूं इणनै काळ–खंडां में बांट्यौ है। आं में पद्मश्री डॉ. सीताराम लाळस रै राजस्थानी सबदकोस रै पैलै भाग री भूमिका में राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ काळ इण भांत दिरीज्यो है–

आदि–काळ – 800 सूं 1460 वि. सं.।
मध्य–काळ – 1460 सूं 1900 वि. सं.।
आधुनिक–काळ – 1900 सूं लगोतार।

आदि–काळ

राजस्थानी भासा रा विद्वानां अर पाठकां सूं आ बात छानी कोनी कै वि. सं. 835 में जाळौर रा जैन यति उद्योतनसूरि री रचना 'कुवलयमाळा' में 18 भासावां साथै मरुभासा रै रूप में राजस्थानी रौ उल्लेख होयौ है। इणसूं सुभट लखावै कै नौवीं सदी में राजस्थानी रौ भासागत सरूप अर दरजौ हौ; पण दसवीं सदी रै छेहलै दसक तांई इणरौ लिखित साहित्य निंगै नीं आवै। अैड़ौ मानण में आवै कै राजस्थानी रौ जूनौ अर सरूपांत रौ सगळौ साहित्य मौखिक रूप में चावौ हौ। इणनै श्रुतिनिष्ठ साहित्य री संज्ञा दिरीजै। इण भांत रै साहित्य री मौखिक रचना अेक–दूजा रै मूंडै सुण'र किणी तीजा रै कंठां ढळ जांवती अर पछै वा रचना कीं चावी अर ता पछै लोकचावी होय जावती।

जद मरुप्रदेस में चारण जाति रौ अस्तित्व ई कोनीं हौ, उण बगत फकत नायक अेक अैड़ी जाति ही जिकी आपरा बडेरां सूं सुण्योड़ा गीत अर पवाड़्यां नै कंठां राखती। गांव–गांव जाय इण जाति रा लोग लोकवाद्यां रै साथै राग–रागनियां में आं पवाड़्यां अर गीतां नै सुणावता अर अरथावता। इणीज बगत में जोगी अर नाथ ई इण मौखिक साहित्य नै जीवतौ राखण में मदत करी। मौखिक सरूप रै कारण इण बगत रा साहित्य नै उणरा असल रूप में राखणौ घणौ दो'रौ काम हौ। उण मांय कीं बातां तौ मिट–मिटायगी अर कीं नूंवी बातां जुड़गी, अबै उण रचना रा मूळ सरूप नै कोई कियां जाण सकै? जूना साहित्य री थाती नै मिटतां देख उणनै उदाहरण खातर चित्रलिपि री सरुआत होयी। चरित्र नायकां रौ पूरौ जीवण चित्रां में उजागर होवण लागौ। सगळी घटनावां रौ चित्रां सूं

पूरौ मेळ होवतौ। चित्रां रै आधार माथै गाईजण वाळा गीतां नै 'फड़' बांचणौ कैवै। राजस्थान रा गांवां में पवाड़्यां अर फड़ नै बांचण रौ काम खास तरै री जातियां रौ होवै। चित्रपटां सूं कथा में थिरता तौ आई, पण मौखिक होवण रै कारण भासा अर वरणन बदळता रैया।

दसवीं सदी री सरूआत में सिंध सूं चारणां रै इण मरुप्रदेस में आवण सूं राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ औ जुग कीं पसवाड़ौ फेरै। इण बगत कविता नै अेक गति (प्रवाह) मिली। प्रदेस री राजनीतिक थिति ऊकचूक ही, राजावां री आपसी लड़ाई अर झगड़ा, खार–ईसकै में साहित्य–सिरजण अर उणनै रुखाळण री बात कुण सोचै? चारण कवि आपरा आश्रयदातावां री विरुदावली में काव्य रचता। इण काळ रा ग्रंथां में घणकरौ जैन साहित्य सांम्ही आवै, जिकौ आपरा धरम सूं जुड़्योड़ौ है। लिखित अर प्रामाणिक साहित्य रै रूप में मिळण वाळा आं ग्रंथां री अंवेर जिनालय, जैन भंडार अर उपासरां में करीजै। जैन–साहित्य री रचना तौ संस्कृत–काळ सूं होवती आई है। प्राकृत अर अपभ्रंस सूं आ रीत राजस्थानी में आई। सरू सूं ई जैन रचनाकार आपरा साहित्य री अंवेर अर रुखाळी वास्तै सावचेत रैया। औ ईज कारण कै प्राचीन राजस्थानी साहित्य रै रूप में अठै रा जैन ग्रंथ ई पुख्ता प्रमाण है।

राजस्थानी रौ आदिकालीन साहित्य मौखिक परंपरा में ई रैयौ, लिखित सरूप घणौ थोड़ौ लाधै। सरूआती काळ री केई महताऊ रचनावां मिलै, पण वांरा रचनाकार कुण है, आ बात पुख्ता नीं होवै तौ कठैई रचनाकाळ में अबखाई आवै कै 'अमुक' रचना किण बरस में लिखीजी? आं रचनावां में आयोड़ा चरित नायकां सूं कीं पड़ताळ करी जाय सकै, पण अेक बगत में अेक नांव रा केई सासक अर मिनख होया, इण कारण आं रचनावां री प्रामाणिकता वास्तै घणै सोध री दरकार है। इण काळ री कीं खास रचनावां में 'खुम्माण रासौ' (चित्तौड़ रै महाराणावां रौ वर्णन है), बीसलदेव रासौ (अजमेर रा राजा बीसलदेव रो वरणन है) प्रमुख है। बीसलदेव रासौ जूनी राजस्थानी रो सबसूं प्रामाणिक ग्रंथ है। प्रेम–काव्य अर संदेस–काव्य रै रूप में लौकिक–शैली री रचना है। 'ढोला–मारू रा दूहा', 'जेठवै रा सोरठा' अर 'आमल–खींवजी रा दूहा' प्रेम–काव्य रै रूप में घणी चावी रचनावां रैयी है कवि असाइत री 'हंसाउली' रचना ई प्रेम–काव्य है जकौ चार खंडां में 440 कड़ियां में लिख्योड़ौ मिळै।

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' राजस्थानी री जूनी अर वीर रस री रचना है। 13वीं सदी तांईं कीं जैनेतर कवियां री फुटकर रचनावां सांम्ही आवै जिकी भासा अर सैली री दीठ सूं महताऊ है। आं में बारूजी सोदा, ढूमण चारण, रामचंद्र चारण, बागण कवि इत्याद खास है।

11वीं सदी सूं 15वीं सदी रा पैलड़ा पांच दसकां तांईं जैन कवियां रा प्रामाणिक ग्रंथ राजस्थानी साहित्य में बधेपौ करता दीखै। आं में– जिनवल्लभ सूरि री रचना 'व्रद्ध नवकार', वज्रसेन सूरि री 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर', सालिभद्र सूरि रचित 'भरतेस्वर बाहुबलि रास', 'बुद्धि रास', कवि आसिगु रचित 'जीवदया रास', 'चंदन बाला रास', धम्म मुनि रचित 'जंबू स्वामी', विजयसेन सूरि रचित 'रेंवतगिरि रास', पल्हण कवि कृत 'आबू रास', 'नेमिनाथ बारामासा', जिनभद्र सूरि रचित 'वस्तुपाल तेजपाल प्रबंधावळी', अभयदेव सूरि रचित 'जयंत विजय', मुनि राजतिलक रचित 'सालिभद्र रास', राजेस्वर सूरि रचित 'प्रबंध कोस', 'नेमिनाथ फागु' अर हलराज कवि कृत 'स्थूलिभद्र फागु' इत्याद अलेखूं रचनावां अर जैन कवियां रा नांव गिणाया जाय सकै। आं जैन रचनावां री

आपरी निकेवळी विसेसतावां रैयी। आं रचनावां में संबंधित (रचना सूं) पूरौ प्रामाणिक विवरण, भासा री पुष्टता (गरबीली अर गुमेज जोग भासा), विविध काव्य रूप परंपरा जिणमें 117 काव्य रूपां री ओळखाण अबार तांई मिळै। जूना गद्य री बोहळायत, अैतिहासिक रचनावां री मोकळायत, नैतिकता माथै बल अर रचनावां नै लोकभासा में लिखणौ। लोक–साहित्य री अंवेर, हजारूं लोकगीतां अर कथावां नै आपरै लिखित साहित्य में अपणाय'र उणनै अखी राख्यौ।

इण भांत आदिकाळ में जैन साहित्य अर जैनेतर साहित्य रै रूप में राजस्थानी साहित्य रा दोय रूप मिळै, जिणांरी खास प्रवृत्तियां– प्रेम–काव्य या सिणगार–काव्य, नीति अर उपदेशात्मक–काव्य, वस्तु–वरणन प्रधान काव्य री रैयी। कीं वीर रसात्मक काव्य रौ सिरजण ई इण काळ में होयौ।

मध्य–काळ (1460 सूं 1900 तांई)

मध्य–काळ राजस्थानी भासा अर साहित्य री दीठ सूं घणौ महताऊ काळ मानीजै। औ राजस्थानी रौ सुवरण–काळ ई कैवीजै। इण काळ में राजस्थानी भासा रौ व्याकरणगत, सैलीगत, विधावांगत जित्तौ विगसाव होयौ, साहित्य री दोनूं विधावां (गद्य अर पद्य) में सिरजण ई उत्तौ ईज होयौ।

राजपूत रियासतां री आपसी फूट, खानवा रा जुद्ध में महाराणा सांगा री हार अर कीं दिनां पछै वांरी मौत सूं दुखी, नाउम्मीद अर निरास मानखौ, मुगलां रै पछै ई मराठां सूं भारत रा वीरां नै हरमेस संघर्ष करणौ पड़्यौ। औ बगत जुद्धां अर संघर्षां रौ काळ हौ। इण जुग में वीरां आपरै वीरत्व री ओळखाण कराई। हसतां–हसतां प्राणां नै मातृभूमि माथै निछावर करण री अठै अनूठी री रैयी है। वीरां री वीरता, साहस, त्याग अर बळिदान री जस गाथावां सूं औ साहित्य सरोवर छल्योड़ौ लाधै। साहित्य नै अखी राखण वाळा कवि किणी–न–किणी राजा रा आसरा में रैवता। आपरा आश्रयदाता री कीरति रै साथै जठै कठैई मिनखीचारौ अर वीरता रा गुण देखता, वै झट उणनै आपरै साहित्य–सिरजण रौ आधार बणाय लेवता अर काव्य रै मिस मानखै तांई वां भावां नै पुगावण रा जतन करता।

देसभक्तां, स्वामीभक्तां, दानवीरां, क्षमावीरां रा त्याग अर जस नै लेय'र अठै रा कवियां जिकौ साहित्य सिरजण कर्‌यौ वै राजस्थानी साहित्य सागर रा अमोलक (घण मूंघा) रतन है। अै कवि कलम अर तलवार रा धणी हा। काम पड़ियां रण में रीठ बजावता, अन्न रौ अैसाण उतार देवता, जुद्धभूमि में ऊभा आपरै ओजस्वी बोलां सूं वीरां री हूंस बधावता। राजस्थान में कोई अैड़ी ठौड़ कोनीं जठै आन–बान अर धरम–मरजाद खातर जुद्ध नीं लड़ीज्या होवै। औ ईज कारण कै अठै गांव अर झूंझारां रा थान थरपीज्योड़ा लाधै। आं सगळां री ऊजळी कीरत रा बखाण करण वाळा कवियां सूं ई आ धरती रीती कोनी रैयी। जठै रा वीर जोधार तो खांगण में लड़तां–लड़तां मरणै रौ मौकौ नीं चूकता, लुगायां अर टाबर आपरी आबरू बचावण वास्तै अगन देवता नै समरपित होय जावता। उठैई इण प्रदेस रा कवि हर अेक दरसाव नै निजरां देखता अर आखरां ढाळता। आपरा काव्य सूं त्याग–समरपण वाळी उण घड़ी–पुळ नै बांध देंवता। जिणां री वीरता नै बैरी ई सरायां बिनां नीं रैया, अैड़ा वीरां रौ जस राजस्थानी कवियां भर–भर मूंडा बखाणियां बिनां नीं रैया। 'राजा करण री बेळा' में याद करणजोगा वां वीरां री भावनावां रौ कविसरां री भावनावां साथै जुड़णौ मात्र हौ, कोई अतिशयोक्ति वरणन कोनीं हौ।

चित्तौड़ रा गढ में अकबर री फौज रै विरोध में घणी वीरता सूं लड़ण वाळा जयमल

मेड़तिया अर पत्ता सिसोदिया री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर साचा साम धरम नै देख अकबर ई बड़ाई कर्‌यां बिनां नीं रैयौ। इत्तौ ई नीं, बादशाह वां वीरां नै अमर करण वास्तै हाथी रै होदै चढ्यो़ड़ा जयमल–पत्ता, दोनूं री मूर्तियां बणाई अर आगरा रै किलै री सिरै पोळ माथै वां पाखाण मूर्तियां नै थिरपत कराई। बैरी ई जाणग्यौ कै गढ रा रुखाळा अर साम धरमी होवै तौ जयमल–पत्ता जैड़ा। उठै प्रमाण सारू औ दूहो ई खुदवायो––

जयमल बड़तां जीमणै, पत्तो डावै पास।
हिंदू चढिया हाथियां, अड़ियौ जस आकास।।

अैड़ा वीरां वास्तै राजस्थानी कवि री लेखनी लिखती नीं थाकी तौ अपजोगती बात कांई? जद कदैई हिंदू राजा निरास होया, कायरता लाया, बैर्‌यां सूं डर'र पग पाछा मेल्या, आपरा कर्तव्यां नै भूलण लागा तौ अठै रा कवियां ई वां में हूंस भरी, कायरां–उर सालण वाळी वाणी सूं जोस जगायौ, कर्तव्य–विमुखां नै सूंवै मारग चालण री सीख दी। राजा जठै कठैई झूठौ गरब कर्‌यौ तौ आपरा सूळ जैड़ा बोलां सूं वांरौ हियौ बींधतां कवि खरा बोल कैवण में अर वांरी भूंड करण में पाछ नीं राखी। कीं दाखला देय'र आं बातां नै पुख्ता करणी चावूं–

खानवा रा जुद्ध में हार्‌यो़ड़ा राणा सांगा में 'आतम–बळ' वापर्‌यौ उण बगत रा कवि 'जमणाजी' रा गीत सूं। जिणरा नांव सूं अकबर सूतौ ओझकतौ अर जिणरी वीरता नै रंग देवतौ, उण महाराणा प्रताप री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर बलिदान किणसूं अछानौ है। दुरसा आढा अर सूरायच टापरिया रा काव्य में प्रताप री वीरता रा जिका बखाण होया है उणसूं कायरां में ई वीरत्व पांगर जावै। जयपुर रा राजा मानसिंघजी जोधपुर (मंडोवर) रा राव जोधा सूं खुद री बरोबरी करतां उदयपुर में पिछोलै घोड़ा पावतां कूड़ौ गरब कर्‌यौ तौ वांरा आश्रित कवि सूं रहीज्यौ कोनीं अर मानसिंघ रौ गरब गाळतां औ दूहौ कैयौ–

मांना मन अंजसौ मती, अकबर बळ आयांह।
जोधै' जंगम आपणा, पांणां बळ पायांह।।

इणी'ज भांत नरहरदास बारठ मारवाड़ रा महाराजा जसवंतसिंघजी (पैला) री कायरता देख'र घणी मै'णी दी। कम्माजी चारणवास मेवाड़ महाराणा राजसिंघ नै चेताया अर हिंदुवांण री रीत राखण री सीख दी।

राजस्थानी साहित्य में अैड़ा हजारूं उदाहरण मिळै, जिणमें कवियां आपरा आश्रयदातावां रौ लिहाज नीं राखतां खारी अर खरी–खोटी पण साची बात कैय'र वांरौ मारग–दरसण कर्‌यौ।

'जस जीवण अर अपजस मरण' वाळी सीख नै मानती अठै री वीरांगनावां ई वीरां सूं अेक पांवडौ ई लारै नीं रैयी। वै किणी कायर, कपूत री मा, बैन, बेटी कै जोड़ायत बणणौ कदैई नीं अंगेजियौ। कायर धणी री लुगाई खुद नै विधवा अर कायर–कपूत री मा खुद नै निपूति कै पछै बांझड़ी मानती। इणी'ज भावना रै कारण 'दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह', हियौ दझावण वाळी अै दोय बातां वीर क्षत्राणी नै कदैई दाय नीं आई। राजस्थानी कवियां घणै अंजस रै साथै वीरांगनावां रा बखांण आपरै काव्य में कर्‌या– जद जयसिंघ कछवाहा री बेटी किसनावती आपरा बेटां री रिछ्या सारू जुद्ध कर्‌यो तो 'गोरधन बोगसा' रै काव्य में देवता ई उण वीरांगना माथै निछावर होयग्या। ईसरदास बारठ 'हालां–झालां रा कुंडळियां' में जसाजी री जोड़ायत रै मूंडै उण वीर री वीरता बखाणी है। जोधपुर महाराजा मालदेवजी री राणी उमादे भटियाणी 'रूठी राणी' बण'र रैयी, महलां रौ सुख नीं देख्यौ; पण मालदेवजी साथै सती होय'र पतिव्रत धरम नै निभायौ जिणरौ जस वरणन 'आसा बारठ' रा सबदां में– 'लछण महा लच्छिमी, जिसी गंगा पारबती' रूप में होयौ।

सत–पत, धीज अर पतीज सूं दोनूं कुळां में ऊजळी कीरत री रीत राखण वाळी वीरांगनावां रै जस री अखूट परंपरा अठै बणगी। आधुनिक काळ रा कवि सूरजमल मीसण तौ आपरी रचना 'वीर सतसई' में वीर नारी रा सगळा रूप दरसाया है अर सिंघ सरूप वीरां नै जणण वाळी उण मातृशक्ति माथै कवि सौ–सौ बार निछावर होवणी चावै।

राजस्थानी साहित्य रा मध्य–काळ में श्रुतिनिष्ठ साहित्य आपरी चाल चालतौ रैयौ, मौखिक साहित्य रा रूप में– पवाड़्या, फड़ां, बातां, लोकगीत, चिरजावां, भजन, हरजस ई इण जुग में आपरी ठौड़ बणावता रैया। लिखित साहित्य रा रूप में– अैतिहासिक काव्य जिकौ चरित नायकां रै नांव साथै रासौ, रूपक, प्रकास, विलास, वचनिका, वेल, वेलि इत्याद लगाय'र लिखीजता। रायमल रासौ, रतन रासौ, सूरजप्रकास, भीमप्रकास, राजविलास, राजरूपक, अनोपसिंघजी री वेल, अचलदास खीची री वचनिका आद आं काव्य–रूपां रा उदाहरण है। केई रचनावां डिंगळ छंदां नै आधार बणाय'र वांरै नांव सूं लिखीजी। जथा– गोगैजी चौहाण री निसांणी, सोढां रा गुण झूलणा, बीदावत करमसेण हिमतसिंघोत री झमाल, हालां–झालां रा कुंडळिया, अभैसिंघजी रा कवित्त, पाबूजी रा दूहा, प्रकीर्णक काव्य, अनुवाद अर अनेक शास्त्रीय साहित्य रै साथै गद्य रूपां में वात, ख्यात, विगत, वंशावली, पीढी इत्याद री इण जुग में बोहळायत रैयी। डिंगळ–गीत, फुटकर रचनावां साथै घणकरौ डिंगळ–काव्य इण जुग री देन है। डिंगळ–काव्य सैली रा रचनाकारां में चारण जाति रौ नांव सिरै मानीजै। आ बात कोनीं कै चारणेतर कवियां री डिंगळ–सैली में कठैई खामी रैयी होवै; पण चारणां री बोहळायत सूं ई ना नीं करीजै। डिंगळ–गीतां रै रूप में चारण–सैली री मौखिक परंपरा ई रैयी। होळै–होळै अै गीत लिखित सरूप लेवण लाग्या। ध्वन्यात्मक सबदां– ट, ठ, ड, ढ ण जैड़ा कठोर करकस सबदां नै चारण–काव्य में परोटण री आपरी न्यारी कला है। इण काव्य में सगळा सबदालंकारां अर अरथालंकारां रै साथै राजस्थानी रौ आपरौ वैणसगाई अलंकार, जिणरौ काव्य री ओळी– ओळी में भरपूर प्रयोग कर काव्य कुसळता री ओळखाण कराईजी है। छंदां री विविधता अर रसत्रिवेणी रा दरसण ई इण चारण–सैली री आपरी इधकी विसेसता रैयी है।

सिवदास गाडण विरचित 'अचलदास खीची री वचनिका', बादर ढाढी री 'वीरमायण', चानण खिड़िया रा गीत, पसाइत री रचना 'राव रिड़मल रो रूपक', 'गुण जोधायण', पद्मनाभ कृत कांन्हड़दे प्रबंध, कवि दामो कृत 'लखमसेन पदमावती चौपई' कवि भाडउ व्यास री 'हमीरायण' अर बीठू सूजो कृत 'राव जैतसी रौ छंद' इण काळ री प्रमुख रचनावां ही।

मध्य–काळ में मिटता हिंदू धरम अर समाज में पग जमावता मुस्लिम धरम, धरम रै नांव माथै होवता अत्याचार, जनता में पसर्‌या अविस्वास मांय हिंदू धरम अर संस्कृति नै उबारण रौ काम कर्‌यौ अठै रा भक्तकवि अर संत संप्रदाय। भक्ति री सगुण अर निरगुण धारा मध्यकाळ में बैवती रैयी। आं भगत–कवियां में भक्त–शिरोमणि मीरांबाई (मीरां पदावली), ईसरदास बारठ (हरिरस अर देवियांण), महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ (क्रिसन रुकमणी री वेलि) रस–त्रिवेणी रै साथै केई भक्ति रचनावां लिखी। सांयाजी झूला कृत 'नागदमण', माधोदास दधवाड़िया कृत 'रांमरासौ', नरहरिदास कृत 'अवतार चरित्र' जैड़ा अलेखूं कवि होया। लौकिक सैली में, लोकभासा अर लौकिक वरणन विसयां री समन्वयवादी दीठ, जनकल्याण, लोकचेतना री भावना सूं

लोकविश्वास नै जगावण सारू अठै रा संतां, संत सम्प्रदायां री घणी महताऊ भूमिका रैयी। संत जांभोजी, सिद्ध जसनाथजी, रज्जबजी, संत दादूदयाल जी, हरिरामदास जी, दयालदास जी इत्याद अनेक संतां आपरी सबद, साखियां, वाणियां रै रूप में धरम, करम, नीति अर उपदेस री बातां समाज लग पुगावण रौ सरावण जोग काम कर्‌यौ। राजस्थानी साहित्य हरमेस आं संत कवियां अर समाज–सुधारकां रौ ऋणी रैवैला।

इण भांत मध्य–काळ में सूरां, सापुरुषां अर सतियां री इण वीर–वसुंधरा वास्तै अलेखूं कवियां आपरी लेखनी रै बळ वीर, सिणगार, नीति अर भक्ति रौ साहित्य रच्यौ तौ संत संप्रदाय धरम री जड़ हरी करी। इणरै साथै ई लोक–साहित्य आपरी सगळी विधावां साथै पांगर्‌यौ अर हरियल रूंख ज्यूं फळ्यौ–फूल्यौ। भासाई दीठ सूं राजस्थानी भासा ई आपरै बाळपणै रै संगी–साथियां नै छिटकाय जोबन मतवाळी, राती–माती निजर आवण लागी।

आधुनिक–काळ (1900 सूं आज तांई)

इण काळ में दोय न्यारी थितियां में न्यारी काव्य–धारावां अर न्यारा विचारां नै बळ मिळ्यौ। आजादी सूं पैली रौ काळ अर आजादी रै पछै रौ काळ। दोनूं बगत चेतना जगावण वाळा हा; पण विसय न्यारा हा। मोटै रूप सूं औ काव्य–चेतना रौ जुग हौ। इण काळ में देस माथै अंग्रेजी हकुमत, उणरा अत्याचारां अर अन्यावां सूं मांनखौ दुखी हौ। 'फूट घालौ अर राज करौ' वाळी दोगली नीत नै अपणाय'र गोरां केई रियासतां माथै हक जमाय लियौ। केई राजा तौ अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया हा। केई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रौ सौदौ कर बैठा हा। इण जुग में ई देसप्रेमियां अर स्वाधीनता नै पूजण वाळां रौ घाटौ कोनीं हौ। राजस्थानी कवि आथूणी हवा साथै उठता काळा धूंवां सूं अणजाण कोनीं हा; गोरी सरकार रै काळा मन नै वै चोखी तरियां जाणता हा। अबै राजावां नै विरुदावण री दरकार कोनीं ही। कवियां परंपरागत काव्य री लीक छोड'र अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में काव्य करण लागा। अंग्रेजां री खोटी नीतियां अर वांरा कानून आगै तळ–तळीजतै मानखै नै न्याव दिरावण वास्तै आं कवियां री कलम चाली। देस में जनजागरण, देसप्रेम, वीरता अर स्वतंत्रता रौ पाठ पढावण वाळा इण जुग रा पैला कवि सूरजमल मीसण होया। वीर रसावतार रै रूप में चावा इण कवि री 'वीर सतसई' रो अेक–अेक दूहौ देसभक्ति अर स्वतंत्रता री सीख देवै, तौ कायरां–उर छैलका करै जैड़ा। रामनाथ कविया 'द्रोपदी–विनय' रै मिस नारी रै विद्रोही रूप नै दरसायो। शंकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतां में अंग्रेजां नै झूंपड़ियां रा धाड़ायती बताईज्या तो केसरीसिंघ बारठ, हींगळाज दान कविया, माणिक्यलाल वर्मा, विजयसिंघ पथिक जैड़ा कवियां अंग्रेजी सत्ता रौ खुलासौ करतां जनचेतना जगाई अर जनता में आजादी रौ सुर भर्‌यौ।

जनकवि ऊमरदान लाळस प्रगतिशील काव्य–धारा री सरूआत करी। समाज नै सांस्कृतिक अर सामाजिक उत्थान सारू चेतायौ। धरम रै नांव माथै होवण वाळा पाखंडां रौ खुलासौ करतां समाज–सुधारक अर जनकवि रौ काम सार्‌यौ।

राजस्थान रा कवि हरमेस थाकल मिनखां रौ साथ दियौ, रियासतां रा सामंतां, जागीरदारां, ठाकरां रा हेठवाळिया करसां अर मजदूरां रौ साथ देवता समाज रा आं ठेकैदारां नै आडै हाथां लिया। जोसीला सबदां में वांनै फटकारण रौ काम गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जैड़ा जनकवि ई कर सकै। समाज रा हेठला तबका रौ साथ देवणिया कवियां में रेंवतदान चारण, उदयराज उज्ज्वळ, हीरालाल शास्त्री अर जयनारायण व्यास जैड़ा कवि आगै आया।

देसप्रेम, अेकता, अधिकारां वास्तै सावचेत करणौ, अशिक्षा नै मेटणी, काम–धंधा अर मैनत री जै बोलावतां वरगभेद अर नारी जागरण री बात आंरी रचनावां में करीजी।

गांधीजी री अगवाई में देस री आजादी खातर जिकी लड़ाई छिड़ी, अठै रौ साहित्यकार ई उणसूं अळगौ अर अछूतौ नीं रैयौ। गांधीजी रै सत्य, अहिंसा, न्याय अर वांरा आदर्शां नै लेय'र साहित्यकारां बोहळौ काव्य लिख्यौ। साथै ई राजनीतिक आंदोलन, समाज–सुधार, अछूतोद्धार, सामाजिक अेकता, कुटीर उद्योगां रै साथै गांधीवादी विचारां सूं ओतप्रोत कवियां अठै रामराज्य री कल्पना ई करी। आं सगळां विसयां नै लेय'र राजस्थानी में सैकड़ूं रचनावां लिखीजी।

साहित्यिक दीठ सूं आधुनिक जुग में केई नूंवी चिंतन धारावां रौ जलम होयौ। देस री आजादी पछै नूंवी काव्य चेतना री सरूआत होयी। प्रकृति संचेतना परक काव्य में प्रकृति रौ मानवीकरण करीज्यौ है। प्रकृति साथै मिनख रौ आद–जुगाद संबंध रैयौ है। मानखै रै हिरदै में लुक्योड़ी भावनावां नै प्रकृति रा कोमल–कठोर, अर रूप–विडरूप रै मिस प्रगट करीजी है। प्रकृति–काव्य कै छायावादी–काव्य री अठै लूंठी परंपरा रैयी। इण काळ रा कवियां में– चंद्रसिंह बिरकाळी (बादळी, लू), नारायणसिंह भाटी (सांझ), नानूराम संस्कर्ता (कळायण, दसदेव), गजानन वर्मा (सोनो निपजै रेत में), कन्हैयालाल सेठिया (मींझर), कल्याणसिंह राजावत (परभाती), रेंवतदान चारण (बिरखा– बीनणी), सुमेरसिंह शेखावत अर डॉ. मनोहर शर्मा आद रा नांव गिणाया जाय सकै।

प्रबंध–काव्यां रै साथै मुक्तक कविता रौ भी जोर रैयौ। प्रबंध–काव्य में रामायण, महाभारत, उपनिषद् अर पौराणिक विसयां नै आधार बणाय'र धारमिक प्रबंध–काव्य लिखीज्या, तौ अैतिहासिक, अर्द्धअैतिहासिक, लोक–काव्य अर काल्पनिक प्रबंध–काव्यां रौ सिरजण ई अठै होयौ। अमृतलाल माथुर री 'गीत रामायण', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कुंजा', 'अमरफळ', 'पंछी', 'मरवण', महावीर प्रसाद जोशी री 'बिंदराबन', 'द्वारका', 'मथरा', 'अंतरधान', श्रीमंत कुमार व्यास री 'रामदूत', सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा', सत्यनारायण 'अमन' प्रभाकर री 'सीसदान', गिरधारीसिंह पड़िहार कृत 'मानखो', करणीदान बारठ री 'शकुंतला' इत्याद प्रबंध–काव्यां रै रूप में मोटी अर लांबी काव्य–रचनावां लिखण री अठै लूंठी परंपरा रैयी है।

आधुनिक–जुग रा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया री कविता में नूंवा बिंब–विधान साथै जीवण–दरसण रा भाव है। देस अर समाज रा बदळता रंग–रूप, ढब, जीवणगत, मानवी भावनावां रा सैंस रूप परगट करण में आधुनिक कवियां री लांबी पांत है जिणमें– तेजसिंह जोधा, मणि मधुकर, ओंकारश्री, पारस अरोड़ा, गोरधनसिंह शेखावत, भगवतीलाल व्यास, मोहम्मद सदीक, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, गणपतिचंद्र भंडारी, किशोर कल्पनाकांत, कल्याण सिंह राजावत, सुमनेस जोशी, सत्यप्रकाश जोशी, रघुराजसिंह हाडा, प्रेमजी प्रेम, सीताराम महर्षि, कानदान कल्पित जैड़ा अलेखूं कवियां आधुनिक कविता में नूंवा भाव–बोध, बिंब–विधान, प्रतीकां नै लेय'र राजस्थानी कविता में नूंवा प्रयोग कर्‍या। धोरां वाळा देस नै जगावण वास्तै कदैई मनुज देपावत नै आगै आवणौ पड़्यौ तौ कदैई 'मानखै' री ऊंडी नींव राखण नै गिरधारी सिंह पड़िहार जैड़ा सादगी वाळा कवि नै मुखरित होवणौ पड़्यौ। श्रीमंत कुमार व्यास नै आपरी बात द्रोपदी, मीरां, मांडवी अर कैकयी रै ओळावै कैवणी पड़ी।

आधुनिक राजस्थानी कविता नै दूजी

भासा री कवितावां रै सैंजोड़ लावण नै, उणरी कूंत करण वास्तै कविता में नूंवा–नूंवा रूप उकेरीजता रैया। बगत रै परवाण कवियां समाज री विडरूपता माथै रोस करता भांत–भांत सूं भावां री अभिव्यक्ति दी है। आं कवियां में– मोहन आलोक, चंद्रप्रकाश देवल, सत्येन जोशी, हरमन चौहान, अस्तअलीखां मलकांण, पुरुषोत्तम छंगाणी, वीरेन्द्र लखावत, सत्यदेव संवितेन्द्र, श्याम महर्षि, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, मीठेस निरमोही, आईदानसिंह भाटी, चैनसिंह परिहार, जुगल परिहार, ज्योतिपुंज, कुंदन माली, अर्जुनदेव चारण, शिवराज छंगाणी, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, चेतन स्वामी, बद्रीदान गाडण, हरीश भादाणी बी. अेल. माली 'अशांत', मालचंद तिवाड़ी, लक्ष्मणदान कविया, रामस्वरूप किसान, मुकुट मणिराज, दलपत परिहार, वासु आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', नीरज दइया, अशोक जोशी 'क्रांत', शंकरसिंह राजपुरोहित, गिरधरदान रतनू दासोड़ी इत्याद आज तांईं रा राजस्थानी कवि इण आधुनिक जुग में आवै।

आधुनिक कविता में प्रकृति संचेतनापरक काव्य, प्रगतिशील काव्य, छायावादी काव्य, प्रतीकात्मक सैली रौ काव्य, नुंवै भावबोध अर जुगबोध रौ काव्य लिखीज्यौ। पारम्परिक काव्य रै साथै नूंवी कविता रौ बानौ पैराय कवियां जीवण रा सगळा प्रसंगां सूं जुड़्योड़ी रचनावां लिखी; आथूणै साहित्य में होवण वाळा नूंवा प्रयोगां रौ असर मायड़ भासा माथै ई पड़ियौ; दूजी भासावां रै देखा–देखी उणां सूं सीख लेय'र राजस्थानी कवियां ई नूंवा–नूंवा काव्य रूपां नै परोटण रा जतन कर्‌या; आपरी बात नै कैवण री न्यारी आंट राखणिया कवियां में नारायणसिंह भाटी, तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकास देवल, मालचन्द तिवाड़ी, अर्जुनदेव चारण रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां री कवितावां में चिंतन री नूंवी रीत निजर आवै।

नूंवी कविता, मिनी कविता रै साथै **गद्यगीत** ई राजस्थानी में लिखीज्या। बारलौ सरूप तौ जिणरौ गद्य रौ पण भावां में काव्य रौ रस आवै। इणमें आलंकारिक, चमत्कारी भासा रौ प्रयोग करीजै वौ गद्यगीत कहीजै। जूना कलात्मक गद्य री ओळ रा गद्य–गीत, जिणां में भावां री सबळता, संगीत री लय वक्रोक्ति अर ध्वनि–संकेत (ध्वन्यात्मकता) जैड़ी विसेसतावां इणां में होवै। रामसिंघ तंवर, विद्याधर सास्त्री, मुरलीधर व्यास, कन्हैयालाल सेठिया अर कु. चन्द्रसिंह रा नांव गिणावण जोग है, जिकै गद्य–गीतां री रचना करी। राजस्थानी **गजल** प्रीत री कुळण, मैफिलां री गायकी नै छोड'र आम आदमी रै जीवण री गजल बणगी। आज री व्यवस्था रै खिलाफ बगावत रा तीखा तेवर रौ अंदाज अर व्यंग्य रौ रौ मारक सुर आं गजलां में जबरौ दीखै। गजलकारां में सत्येन जोशी, नवल जोशी, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, श्यामसुंदर भारती, भागीरथ सिंह भाग्य, जुगल परिहार, राजेन्द्र स्वर्णकार, सत्यदेव 'संवितेन्द्र' आद आवै। **डांखळा** पांच ओळी वाळौ वरणिक छंद है। अंग्रेजी रै लिमरिक छंद री बुणगट नै अपणाय'र राजस्थानी कवियां इणमें रचना रची। आपरी भासा नै सिरमथ बणावण खातर दूजी भासावां रा छंदां नै अपणाय आज रा कवियां भांत–भांतीला मनोरंजक विसयां माथै 'डांखळा' लिखिया। राजस्थानी में हास्य–व्यंग्य आंरौ खास विसय रैयौ है। मोहन आलोक, विद्यासागर, श्यामसुंदर भारती, बजरंग सारस्वत रा डांखळा घणा सराईज्या। शिव पारीक री पोथी 'गळै में अटक्यौ डांखळौ' नाम सूं सांम्ही आवै। डांखळौ चुटकलानुमा काव्य रौ रूप है। आज री नूंवी चिंतन सैली अर सबदां री पकड़ आं डांखळां में निजर आवै।

काव्य–रूपां री इण जूण–जातरा में राजस्थानी कवियां जापानी छन्द '**हाइकू**' में ई आपरी हथौटी कसण रा जतन करै। भारत

सूं चीन अर जापान में गयोड़ा बौद्ध धरम रा अनुयायी धरम उपदेस अर सीख री बात नै थोड़ा'क सबदां में कैवता। इण रचना–बंध नै 'हाइकू' नांव दिरीज्यौ, जिणरी जड़ां भारतीय साहित्य सूं ई सींचीजी है। ध्यान, गैरा चिंतन सूं मन रा झीणा विचारां नै कम सबदां में कैवण री कला रौ नांव 'हाइकू'। फगत (17) सतरा आखरां रौ नैनौ–सोक वरणिक छंद है– हाइकू। इणमें भासा अर भावां री सूक्ष्मता है; सांवर दइया, लक्ष्मीनारायण रंगा, नीरज दइया, भंवरलाल भ्रमर, सुमन बिस्सा, घनश्यामनाथ कच्छावा जैड़ा कवियां 'हाइकू' में आपरा विचार राख्या है। **सोनेट** राजस्थानी कविता आज री दौड़ में लारै नीं रैय जावै, इणरी पूरी खैचल अठा रौ कवि करतौ रैवै। वाणी रौ वर तौ मां सुरसत रा इण लाडलां नै मिळ्योड़ौ है ई। 14 (चवदै) ओळी रा इण छंद में जीवण री जथारथ थितियां अर घटनावां रौ वरणाव, आपरै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ सांच अर आपरै हियै रा निजू संबंधां री बात नै घणा मरम परसी सबदां में कथीजण री कळा राजस्थानी कवि मोहन आलोक री थाती है। 'सौ सोनेट' नांव री इण पोथी में 102 सोनेट छंद है। न्यारा–न्यारा विसयां में सबदां री कळा अर भावां री परगळाई है। अंग्रेजी छंद नै अपणाय आपरै हियै री बात उकेरण में राजस्थानी लारै नीं रैया। पढती बगत ई कठैई अबखायी नीं लखावै कै इण छंद री पकड़ में राजस्थानी कवियां कीं खामी राखी होवै। इणरै पछै **बीजीकावां** ई राजस्थानी में रचीजी, जिणमें साव थोड़ा'क सबदां में सार री बात कैवणी होवै। हिन्दी री 'क्षणिकावां' ज्यूं जीवण रा आम–फेम प्रतीकां अर बिम्बां नै नूंवा, अबोट आखरां नै अरथ देवती, सचोट तीखी व्यंग्य भरयोड़ी, थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता राखण वाळी अै 'बीजीकावां' जीव जगत रा न्यारा–न्यारा रूपां नै उकेरती निजर आवै। लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजीकावां सरावण जोग है। ओम पुरोहित 'कागद' री 'कुचरणी' में अरथावूं कुचरणयां रौ मापौ ई कोनी। दौलतराम डोटासरा रा **'टुणकला'** ई जूना ओखाणां ज्यूं अरथावै जिणमें सार बात कहीजी है। राजस्थानी में भासाई सबदां रौ औ साव नूंवौ प्रयोग है।

इण भांत आधुनिक राजस्थानी काव्य साहित्य में काव्य रा नूंवा रूपां रौ प्रयोग ई साहित्य भंडार नै सिमरथ करैला अर इण भासा री कूंत करण में आज रा अै काव्य–रूप आपरी सैनरूपता रौ म्यानौ देवैला। आधुनिकता री दौड़ में आगै बधता साहित्य रा पग मंडाण आपरी मंजिल लग पूगैला।

राजस्थानी साहित्य में नारी लेखण री बात करां तौ केई शोध–प्रबन्ध त्यार होय जावै। मध्यकाळ री मीरां सूं जीवण री सीख लेय'र अलेखूं महिला रचनाकार सांम्ही आवै। सगुण–निरगुण भगती रा सुरां नै आपरा पदां में अंवेरती दया बाई, सहजो बाई, गवरी देवी, स्वरूपां बाई, राणा बाई, इण सूं ई पैली सोढी नाथी अर रसिक बिहारी रा नांव भक्तिमती कवयित्रियां में आवै, तौ पतिव्रत धरम, तीज–तिंवार अर देसप्रेम नै प्रकृति रा मोवणा चितराम ई भगती नीति रै साथै निजर आवै। आं मांय दीप कुंवरी, उमादेवी जैड़ी रचनाकार सांम्ही आई।

आज नारी सामाजिक विडरूपता, अबखायां नै आपरी रचनावां पेटै उकेरै। सामाजिकता रै ढांचा में दोवड़ी विचारधारा में पीसीजती नारी आज आपरी लेखणी सूं उण असमानता नै नकारै। जथारथ वरणन में नारी लेखण आपरी व्यथा री कथा कैवै। 'घर मजलां घर कूचां' रै साथै नूंवी सोच, मानवी–संघर्ष, मानवतावादी दीठ रौ लेखौ करती आपरी दिसा में चाल रैयौ है। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'कैक्ट्स मांय तुळसी' काव्य संकलन

सामाजिक विसंगतियां नै उकेरै। डॉ. सावित्री डागा, संतोष मायामोहन, डॉ. कमला जैन, वंदना शर्मा, डॉ. अरुणा शर्मा, प्रतिभा व्यास, सुमन बिस्सा, कविता किरण, मोनिका गौड़, राजेश दुलारी सांदू, कमला कमसिन, डॉ. प्रकाश अमरावत, श्रीमती शारदा कृष्ण, किरण राजपुरोहित 'नितिला', रीना मेनारिया, ऋतुप्रिया, छैल कंवर चारण, डॉ. लीला मोदी आद अनेक महिला रचनाकारां री काव्य प्रतिभा– गीत, कविता, गजल अर छंदां रै रूप में सांम्ही आवै। आज समाज रूपी रथ रौ दूजोड़ौ पहियौ ई लेखणी री धुरी बणाय साथै संभग्यौ है। नूंवी चेतना रै संचार संचरियौ अर अबै समाज नै आगै बधण सूं कुण रोक सकैला। राजस्थानी साहित्य रा रूंखड़ां नै हरियल करणियां डाळियां, पानड़ा, कूंपळ, फूल अर फळां रै रूप में आपरी न्यारी ठौड़ फाबतां सिरजणहारां री साख भरूं तौ म्हारौ सौभाग है। बाल–साहित्य में ई राजस्थानी लेखन लारै कोनी। टाबरां रै वास्तै हेत–अपणायत अर शिक्षाप्रद कवितावां री बानगी इण में देखीजै।

आं मांय सूं केई कवि परंपरागत काव्य लिखै, तौ केई जथारथवादी काव्य रै नैड़ा ढूकै। केई प्रकृति रा प्रेमी इणरा कण–कण नै आखरां ढाळै, रूंखां री महिमा गावै, तौ केई मैणत रा नारा देवै। केई संस्कृति री रूपाळी छिब तीज–तिंवारा देख'र उणरा गीत गावै तौ केई नूंवा भाव–बोध साथै अनाम कविता, मिनी कविता नै सिरजै। मानवी भावनावां साथै जुड़'र झीणी संवेदना नै कविता रा सुर बणावै, तौ केई समाज री दसा अर दिसा माथै छीजतौ निजर आवै। कोई विरलौ कविता नै साचै संचै ढाळै, तौ केई फकत नांव खातर च्यार ओळ्यां मांड'र कवि बण जावणौ चावै। कीं होवौ, आधुनिक राजस्थानी कविता री थिर जातरा करता आगै बधता आं कवियां री कोरणी मंड्या आखरां में आधुनिक भावबोध, नवजीवण अर नूंवै भावबोध, कथ्य, रचाव, विचार, भासा, बिंब अर सिल्प सरावण जोग अर आपरी निकेवळी पिछाण बणावण जोग है।

इण भांत आधुनिक काव्य री खास प्रवृत्तियां में जथारथवादी काव्य, प्रगतिशील काव्य, नवजीवण रौ काव्य, नव भावबोध रौ काव्य, हास्य–व्यंग्यात्मक काव्य, प्रकृतिवादी काव्य, नूंवां बिम्ब अर प्रतीक विधान में लिखीज्यौ तौ परम्परागत काव्य में भक्ति, नीति, प्रकृति, वीरता, सिणगार रौ काव्य ई बरोबर लिखीजतौ रैयौ, गिरधरदान रतनू दासोड़ी जैड़ा कवियां रै पाण डिंगळ रौ डमरू छन्दां री छौळां रै पाण आपरौ नाद गुंजावै, तो छंदमुक्त कवितावां ई आधुनिक राजस्थानी साहित्य में होवण लागी।

राजस्थानी गद्य–साहित्य

राजस्थान री जसगाथा उणरै साहित्य मांय रची–बसी है। राजस्थानी साहित्य मांय वीरत री कीरत बखाणीजै। इण साहित्य रौ नांव लेवतां ई वीरता सूं उफणतौ साहित्य चेतै आवै। इण साहित्य री बात करां तौ गद्य–पद्य दोय रूप सांम्ही आवै। राजस्थानी गद्य–साहित्य रौ इतिहास घणौ जस भरियौ है।

देवभासा संस्कृत सूं पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर आधुनिक आर्य भासावां रौ जलम होयौ, अैड़ौ मानीजै। संस्कृत सगळी भासावां री जणनी है। संस्कृत सूं ईज पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर दूजी भारतीय भासावां रौ जलम होयौ। अपभ्रंस रै सत्ताईस भेदां में घणी चावी तीन अपभ्रंस भासावां– नागर अपभ्रंस, मरु गुजरी अपभ्रंस अर सोरसैनी अपभ्रंस नै लेय'र न्यारा–न्यारा विद्वानां राजस्थानी री उत्पत्ति वास्तै आपरा विचार राखिया है, जिणमें डॉ. उदय नारायण तिवारी, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, हीरालाल माहेश्वरी, विदेसी विद्वानां में डॉ.

एल. पी. तैस्सीतोरी, रिचर्ड्स पिसल आद विद्वानां रा मत पढियां पछै औ लखावै कै घणकरा सोरसैनी अपभ्रंस सूं ईज राजस्थानी री उत्पत्ति मानै सबसूं पैली राजस्थानी भासा रौ उल्लेख वि. सं. 835 में जालौर रा जैन यति उद्योतन सूरी रा ग्रंथ 'कुवळयमाला' में 18 भासावां रै साथै मरुभासा रै रूप में राजस्थानी रौ उल्लेख मिळै। इणरौ अरथ औ है कै विक्रम री 9वीं सदी में मरुभासा रै रूप में राजस्थानी लोकचावी ही।

राजस्थानी रौ आपरौ सिमरथ रूप अर साहित्य है। भासा वैग्यानिकां री दीठ में अेक भासा रै वास्तै उणरौ तै भू–भाग, बोलणवाळा, सबदकोस, व्याकरण, लिपि अर साहित्य भंडार होवणौ चाईजै, जिकौ राजस्थानी कनै है। इणरी बोलियां मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मारवाड़ी, बागड़ी, मेवाती राजस्थानी रै सिमरथपणै री साख भरै तौ इणां रौ अखूट साहित्य इणरै सिमरथ होवण नै जगचावौ करै।

राजस्थानी रै गद्य–साहित्य रै इतिहास नै जाणण सारू जूनी पुड़तां उधेड़णी पड़ैला। राजस्थानी गद्य रौ उद्भव 13वीं सदी सूं मानीजै। सरुआती गद्य माथै अपभ्रंस रौ असर देखण नै मिळै। 13वीं सदी सूं लेय'र 16वीं सदी तांई रौ बगत जूनी राजस्थानी रौ रैयौ। 16वीं सदी तांई राजस्थानी अर गुजराती रौ अेक रूप रैयौ अर पछै अै दोय न्यारी भासावां रौ रूप लेय लियौ।

राजस्थानी रौ पद्य–साहित्य जित्तौ सिमरथ है, गद्य–साहित्य ई उत्तौ ईज सिमरथ अर रातौ–मातौ है। राजस्थानी में प्राचीन गद्य रूप में विविध विसयक गद्य मिळै। जूनै राजस्थानी गद्य नै विसय री दीठ सूं पांच भागां मांय बांटीज्यौ है–

धारमिक गद्य मांय टीका, टब्बा, बालावबोध, पट्टावली अर गुर्रावली आवै। कोई भी धार्मिक ग्रन्थ नै समझण खातर उणमें कथावां दी जावती, उणां री विरोळ मूळ पाठ रै हेठै या अलग सूं देवता, वांनै टीका कैयौ जावतौ। उणी'ज भांत टब्बा रौ रूप हुवतौ, पण टब्बा मूळ पाठ रै हासियै माथै लिखीजता। टाबरां नै बोध करावण सारू, वांनै धरम अर सदाचार री सीख 'बालावबोध' सूं दिरीजती। जातक कथावां रै सरूप रै रूप में इणरौ मैतव रैयौ है। इणमें सं. 1411 में खरतरगच्छ रा तरुणप्रभ सूरि रौ 'षडावश्यक बोलावबोध' सब सूं जूनौ मान्यौ जावै। इणी भांत गुरु–चेलै री परम्परा नै निभावण सारू गुरु रै पछै चेलै नै पाट (गादी) माथै बैठायौ जावतौ, उणरै इतिहास, गुरु अर चेलै रै परिचै नै इण विधा में परोट्यौ जावतौ। जैन परम्परा मांय वंशावली रौ दूजौ रूप गुर्रावली रौ रैयौ है जिकी गुरु–चेलै सूं जुड़ी है।

अैतिहासिक गद्य मांय वात, ख्यात, वचनिका, दवावैत, विगत, वंसावली जैड़ी गद्य विधावां आवै। 'वात' न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र रचीजी है। आधुनिक जुग री कहाणी विधा ईज उण बगत 'वात' रै नांव सूं जाणीजती। अै वातां अैतिहासिक, अर्द्ध अैतिहासिक, धारमिक, नीति प्रधान हुया करती। 'ख्यात' नै चरित्र ग्रन्थ अथवा उर्दू–फारसी रै 'नामा' या 'आइने' रै नैड़ौ मान्यौ जाय सकै। ख्यात में घटना वरणन, चरित्र वरणन रै सागै अैतिहासिक तथ्यां नै भी महत्त्व दिरीज्यौ है। इण में सिसोदियां री ख्यात, मुहणोत नैणसी री ख्यात, महाराजा मानसिंह री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उमरावां री ख्यात, बांकीदास री ख्यात सिरै ओळी में आवै। 'विगत' रै मांय अेक ईज ठौड़, घटनावां, मिनखां अथवा जातियां रौ विगतवार वरणन करियौ जावै। इणमें मारवाड़ रा परगनां री विगत, मेवाड़ रा भाखरां री विगत, कछवाहा सेखावतां री विगत आद आवै। अेक ईज परिवार कै जाति रौ जद

अेक वंशवृक्ष रै सायरै सूं पीढी–दर–पीढी रौ गद्यात्मक वरणन करियौ जावै उणनै वंसावली रै नांव सूं ओळखीजै। राठौड़ां री वंसावळी, महारावळ री वंसावळी, झालां री वंसावळी, राठौड़ राजावां री वंसावळी, राजपूतां री वंसावळी आद।

हकीकत सूं अरथ जथारथ रौ बखाण हुवै। इणरौ उद्देस्य कोई घटना या खास बात री जांणकारी देवणी होवै। इणमें मनसब री हकीकत, हाडां री हकीकत, पातसाह औरंगजेब री हकीकत उल्लेखजोग है। इणी'ज भांत **'हाल'** में भी हकीकत रै दांई कोई खास घटना रौ बखांण करियौ जावै। 'सांखला दहियां सूं जांगळू लियौ तेरौ हाल' इण रीत री अेक खास रचना है। **'वचनिका'** सबद संस्कृत रै 'वचन' सबद सूं बणियौ है। गद्य–पद्य मिश्रित रचना जिणनै संस्कृत में चम्पू काव्य भी कैयौ जावै। इणमें अचलदास खींची री वचनिका, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासौत री, जिन समुद्र सूरि री वचनिका, माताजी री वचनिका आद आवै। **'दवावैत'** सबद री व्युत्पत्ति अरबी भासा रा सबद 'वैत' सूं मानी जावै। दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत 'नरसिंहदास गौड़ री दवावैत' मानीजै। इणरै पछै 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत', 'असमाल देवड़ा री दवावैत', 'महाराजा लखपत री दवावैत' चावी रैयी।

अभिलेखीय गद्य रै मांय ईंटां, भाटां, धातुपत्रां माथै खुदयोड़ौ गद्य आवै। इण तरै मिळण वाळौ साहित्य राजाज्ञावां, आदेसां, फरमाण, दान–पात्र, सम्मान–पत्र, पट्टा अर परवानां रै रूप में मिलै। औ आदिकाळ में घणौ मिळियौ है। विविध विसयक गद्य मांय आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण जैड़ा अलग–अलग विसयां सूं जुड़िया ग्रन्थ जैन अर जैनेतर सैली में मिळै। इणां में ज्योतिष में जन्म पत्रिकावां री भी महताऊ ठौड़ है। इण तरै प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य रौ संसार घणौ लांठौ है। मध्यकाळ में राजस्थानी भासा में बत्तौ अर असरदार गद्य रौ सिरजण हुयौ। नांव अर रूप न्यारा–न्यारा रैवता थकां ई कदैई रूपगत अेकता तौ कदैई विसयगत अेकता रै कारण आपस में जुड़ियोड़ी रैयी। फूल री पांखड़ियां ज्यूं जुड़्योड़ी अै विधावां राजस्थानी साहित्य में आपरी सौरम बिखेरी। जूनै राजस्थानी गद्य री आपरी अलायदी ओळख है। दूजी भासावां रा साहित्य में स्यात ई लाधै। इणरै साहित्य भंडार सूं कित्ता–कित्ता ग्रन्थ–रत्नां नै परोटतां इतिहासकारां राजस्थान प्रदेस रै इतिहास रौ रूप संवारियौ अर राजस्थानी साहित्य आपरौ आपौ थापियौ– आं विधावां रै कारण ईज।

राजस्थानी रै आधुनिक गद्य रौ जलम 19वीं सदी सूं ई मानीजै। सन् 1857 री क्रान्ति री बेळा वीर रसावतार सूर्यमल्ल मीसण पद्यात्मक रूप में तौ 'वीर सतसई' री रचना करी, पण आप नूंवी राजनीतिक चेतना अर कर्तव्य पुकार सूं सराबोर कागद ई लिख्या। वां कागदां री भासा में नूंवै राजस्थानी गद्य रा बीज मिळै। सूर्यमल्ल मीसण रा लिख्योड़ा अै कागद नूंवा गद्य री नींव में दिरीज्या, जिण माथै उण बगत रा नामी लेखकां गद्य रूपी म्हैल ऊभौ करता रैया। आज लग उण म्हैल माथै ऊपरो–ऊपरी मेड़ी–माळिया बणता जाय रैया है, जिणरी थाग कोनी। नूंवा गद्य में नूंवै जमानै री दूजी भासावां रै नकल री गद्य विधावां रौ सिरजण राजस्थानी में होवण लाग्यौ। इण बगत में घणकरा प्रवासी राजस्थानी आपरी मायड़भासा रौ मान बधायौ।

शिवचन्द्र भरतिया अेक अैड़ौ नांव है जिका उपन्यास, कहाणी अर नाटक जैड़ी

विधावां री सरुआत राजस्थानी में करी। उण पछै तौ राजस्थानी मांय उपन्यास, कहाणी, नाटक, निबन्ध, अेकांकी, रेखाचित्राम, संस्मरण, बाल–साहित्य जैड़ी विधावां दीठाव में आई। अठै राजस्थानी री आं विधावां री कीं जाणकारी टाबरां नै करावणी चावूं।

राजस्थानी मांय पैलौ उपन्यास 'कनक सुंदर' मान्यौ जावै। सन् 1903 में शिवचन्द्र भरतिया इण उपन्यास में उण बगत री बुरायां रै निवारण खातर सुधारवादी दीठ राखी है। उपन्यासकार इण मांय बालब्याव, दायजौ, अनमेळ ब्याव आद नै पाठकां सांम्ही ल्यावण रौ जतन करियौ है। राजस्थानी रौ दूजौ उपन्यास श्रीनारायण अग्रवाळ रौ 'चम्पा' है जिणमें समाज–सुधार री भावना राखीजी है। इण पछै श्रीलाल नथमल जोशी रा 'आभै पटकी', 'अेक बीनणी दो बीन' अर 'धोरां रौ धोरी' उपन्यास पाठकां सांम्ही आया। अन्नाराम सुदामा रौ 'मैकती काया मुळकती धरती', 'मेवै रा रूंख?', 'आंधी अर आस्था', 'डंकीजता मानवी', 'घर संसार', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रा 'हूं गोरी किण पीव री', 'जोग संजोग' अर विजयदान देथा रा 'तीडौ राव', 'मां रौ बदळौ' अर 'आठ राजकंवर' जैड़ा लोक उपन्यास सांम्ही आया।

नूंवै जुग मांय नूंवा विसयां नै लेय'र उपन्यास सांम्ही आया। बी. एल. माली 'अशांत' रा च्यार उपन्यास 'मिनख रा खोज', 'बैजू', 'अबोली' अर 'बुरीगार निजर' सांम्ही आया। मालचन्द तिवाड़ी रौ 'भोळावण', छत्रपति सिंह रौ 'तिरसंकू', पारस अरोड़ा रौ 'खुलती गांठां', दीनदयाल कुंदन रौ 'गुंवारपाठौ', सत्येन जोशी रौ 'कंवळपूजा', भूरसिंह राठौड़ रौ 'राती घाटी', रामनिवास शर्मा रौ 'काळ भैरवी', करणीदान बारहठ रौ 'मंत्री री बेटी', अब्दुल वहीद 'कमल' रौ 'घराणौ' सूं आगै बधेपौ कर उपन्यास साहित्य मांय नूंवा रचाव हुया। इण विधा माथै नूंवा लिखारा भी आपरी कलम सवाई करी, जिणमें सुरेन्द्र अंचल रौ 'सुपना रौ सायबौ', ओमदत्त जोशी रौ 'पाणी पीजै छाण, देवकिशन राजपुरोहित रा 'सूरज', 'कूपत', 'कळंक', 'धाड़वी', 'दातार', देवदास रांकावत रा 'मुळकती मौत कळपती काया', 'धरती रौ सुरग', 'गांव! थारै नांव', नवनीत पाण्डे रौ 'माटी जूण', मधु आचार्य 'आशावादी' रा 'गवाड़', 'अवधूत' अर 'आडा–तिरछा लोग' सांम्ही आवै। इक्कीसवैं सईकै में इण विधा माथै लगोलग काम हुय भी रैयौ है। आज इण विधा नै परोटण री घणी दरकार है।

कहाणी राजस्थानी साहित्य रै नूंवै जुग री देन है। 'बात' परम्परा सूं अळगी हट'र राजस्थानी कहाणी आपरी नूंवी सरुआत करी। बीसवीं सदी सूं कहाणी विधा पेटै काम होवण लाग्यौ। नूंवा विसयां अर सिल्प नै लेय'र कहाणीकार पाठकां सांम्ही पोथ्यां लाया। 1904 में आधुनिक राजस्थानी री पैली कहाणी कलकत्तै सूं निकळण वाळी हिन्दी मासिक पत्रिका 'वैश्योपकारक' में शिवचन्द्र भरतिया री 'विश्रान्त प्रवासी' मानीजै। इणरै पछै गुलाबचन्द नागौरी री 'बडी तीज', 'बेटी की बिकरी' अर 'बहू की खरीदी', शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्यापरं दैवतम्', 'स्त्री शिक्षा को ओनमा', ब्रजलाल बियाणी री 'रामायण' अर भगवती प्रसाद दारूका री 'अेक मारवाड़ी की घटना' अर 'अेक मारवाड़ी की बात' छपी। अै कहाणियां उण बगत रै राजस्थानी समाज री सामाजिक बुरायां नै उजागर करै, इण सारू आं में सुधारवादी सुर दिखै। अै कहाणीकार राजस्थानी समाज मांय रची–पची सामाजिक अबखायां कांनी पाठकां रौ ध्यान खींचण री कोसीस करी। अै कहाणियां जूंनी राजस्थानी बातां सूं घणी'ज न्यारी ही। न तो इणां में कोई अलौकिक पात्र हा अर न ई कोई अलौकिक घटनावां। इणमें किणी भांत रा राजा–राणी या राजकंवर जैड़ा पात्र

नीं हा, आं में फगत जथारथ नै उजागर करीज्यो हो। इण कारण कैय सकां कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत प्रवासी राजस्थानी कहाणीकारां करी।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत मुरलीधर व्यास सं. 2012 (1955) आपरै कहाणी संग्रै 'बरसगांठ' सूं करी। आधुनिक राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय दो धारावां देखी जाय सकै। अेक धारा तौ सुधारवादी सोच लियां दीखै तौ दूजी धारा मांय तत्कालीन सामाजिक जीवण मांय आवता बदळाव अर वां बदळावां रै कारण जीवण–मूल्यां माथै पड़तै प्रभाव नै प्रकट करणै री कोसीस करीजी। राजस्थानी रा आधुनिक कहाणीकार भाव अर सिल्प दोनूं स्तर माथै कहाणियां नै मांजण लाग्या। इणां मांय अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द प्राणेश, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, नृसिंह राजपुरोहित, मनोहर शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ नांव सिरै ओळी में आवै। आं कहाणियां में 'भूरी', 'कल्गि महातम' (बैजनाथ पंवार), 'बोल म्हारी मछली', 'उतर भीखा म्हारी बारी', 'भारत भाग्य विधाता' (नृसिंह राजपुरोहित), 'माटी री हांडी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'आंधै नै आंख्यां' (अन्नाराम सुदामा) आवै। लोककथावां री सैली मांय राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, डॉ. मनोहर शर्मा, नानूराम संस्कर्ता आद रचनाकारां लोक संस्कृति अर लोकचेतना नै लेय'र कहाणियां लिखी।

राजस्थानी कहाणी आपरी जात्रा मांय आज तांई केई पांवडा भरिया है। न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र कहाणीकारां आपरी कथा–कृतियां पाठकां सांम्ही राखी। इणां में नानूराम संस्कर्ता री 'ग्योही', नृसिंह राजपुरोहित री 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'मऊ चाली माळवै', 'प्रभातियौ तारौ', 'अधूरा सुपना', मूलचन्द प्राणेश री 'उकळता आंतरा : सीळा सांस' अर 'चस्मदीठ गवाह', बैजनाथ पंवार री 'लाडेसर', 'नैणां खूट्यौ नीर', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कन्यादान', अन्नाराम सुदामा री 'आंधै नै आंख्यां', श्रीलाल नथमल जोशी री 'परण्योड़ी कंवारी', 'मैंधी, कनीर अर गुलाब', सांवर दइया री 'असवाड़ै–पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी', भंवरलाल भ्रमर री 'तकादो', 'सातूं सुख', दामोदर प्रसाद शर्मा री 'प्रेतात्मा री पीड़', 'रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'सळवटां', बी.अेल. माली अशांत री 'किली किली कटकौ', 'राई–राई रेत', मनोहर सिंह राठौड़ री 'रोसनी रा जीव', 'खिड़की', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र री 'समंद अर थार', मदन सैनी री 'फुरसत', 'भोळी बातां', मालचन्द तिवाड़ी री 'धड़ंद', 'सैलिब्रेसन', मीठेस निरमोही री 'अमावस, अेकम अर चांद', चैनसिंह परिहार री 'चरकास', रामस्वरूप किसान री 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार', सत्यनारायण सोनी री 'घमसांण', भरत ओळा री 'जीव री जात', मदन केवलिया री 'काळी कांठळ', बुलाकी शर्मा री 'हिलोरो', 'साच नै आंच', कमल रंगा री 'सीप्यां अर मोती', रामेसर गोदारा री 'मुकनो मेघवाळ' अर 'वीरे तूं लाहौर वेखण आई', मनोज स्वामी री 'कियां' अर 'इमदाद', मधु आचार्य 'आशावादी' री 'ऊग्यौ चांद ढळ्यौ जद सूरज', 'आंख्यां मांय सुपना', डॉ. मदन गोपाल लढ़ा री 'च्यानण पख' अर राजेन्द्र जोशी री 'अगाड़ी' सांम्ही आयी। राजस्थानी कहाणी री इण जात्रा मांय लुगायां भी आपरी कलम सवाई करी है। आं महिला रचनाकारां मांय डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत री 'हियै रा हरफ', माधुरी मधु री 'केसरिया बालम', 'तिड़कण लाग्या बांस', कुसुम मेघवाल री 'अमंगळी छाया' आद नांव इण कहाणी–जात्रा मांय उल्लेखजोग है।

राजस्थानी गद्य विधावां में **निबन्धां** री महताऊ ठौड़ है। आधुनिक जुग में न्यारा–न्यारा

विसयां माथै निबन्ध लिखीज्या है। निबन्ध विचारं नै, भावां नै अर विसय नै चोखी तरियां बांधण रौ काम करै। राजस्थानी मांय निबन्धां रौ पैलड़ौ सरूप 'मारवाड़ी भास्कर' अर 'मारवाड़ी' जैड़ा पत्रां में प्रकासित हुवण वाळा लेखां में देखण नै मिळै। बृजलाल बियाणी रा निबन्ध 'मोगराकली', 'गुलाबकली', 'बड़ी फजर रौ दीवौ' आद ललित निबन्ध 'पंचराज' में प्रकासित हुया। इण पछै तौ केई निबन्ध सांम्ही आवै। आगीवांण, ओळमों, जलमभोम, मरुवाणी आद पत्र–पत्रिकावां मांय निबन्ध प्रकासित हुया। आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा चावा निबन्धा–संग्रहां मांय 'राजस्थानी संस्कृति रा चितराम', 'धर कोसां धर मजलां', 'अर्जुण आळी आंख', (जहूरखां मेहर), 'भल लुवां बाजौ कित्ती', 'लोक रौ उजास' (डॉ. किरण नाहटा), 'पांवडा, पड़ाव अर मंजल' (बी.एल. माली 'अशांत'), 'बळिहारी उण देसड़ै', 'बुगचौ' (मूळदान देपावत), 'डीगा डूंगर ध ोळिया' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'नाक री करामात' (बुद्धिप्रकाश पारीक), 'प्रीत रा पंछी' (अस्तअली खां मलकांण), 'अणभूत दीठ' (नरपतसिंह सिंघवी), 'सोनलिया ओळखांण' (माणक तिवाड़ी 'बन्धु'), 'इतिहास रौ साच' (डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा), 'संस्कृति री सौरम' (डॉ. शक्तिदान कविया), 'सुर नर तो कथता भला', 'सूरज कदै विसूंजै कोनी' (सूर्यशंकर पारीक), 'कवि, कविता अर घरवाळी' (बुलाकी शर्मा), 'सिरजण री साख' (डॉ. मदन सैनी), 'मणिमाळ' अर 'रस कळस' (प्रो. कल्याणसिंह शेखावत), 'परख सिरजण' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'कीरत रा बखाण' (डॉ. नमामीशंकर आचार्य), 'सुण अरजुण' (शंकरसिंह राजपुरोहित) आद रौ नांव सिरै आवै।

राजस्थानी मांय **नाट्य परम्परा** घणी जूनी है। लोकनाट्य रै स्यारै सूं मनोरंजन, शिक्षा अर ग्यान बढावण रौ काम होवतौ। इण लोकनाट्य में ख्याल, स्वांग, रम्मत, रासलीला, फड़, टूंट्या आद लोकचावा है। आधुनिक राजस्थानी नाटकां री सरुआत शिववचन्द्र भरतिया सूं मानी जावै। वांरौ पैलौ नाटक 'केसर विलास' सन् 1900 में प्रकासित हुयौ। इण परम्परा में दूजा नाटकां रौ लेखन अर प्रकासन अलग–अलग रचनाकारां द्वारा करीज्यौ।

जद बात आपां राजस्थानी नाटकां री विसय–वस्तु री करां तौ सरुआती नाटक सामाजिक धरातळ सूं जुड़िया लखावै। आं नाटकां मांय रचनाकार सामाजिक अबखायां नै सांम्ही लावण रौ जतन करियौ। 'केसर विलास' मांय बदळाव रा सुर दिखै। मारवाड़ी समाज री रीति–कुरीतियां रौ वरणाव इण नाटक में घणौ ई हुयौ है। भरतियाजी रा दूजा नाटक 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापै री सगाई' सांम्ही आवै। इण पछै भगवती प्रसाद दारूका रा 'बालविवाह', 'वृद्धविवाह', 'सीठणा सुधार', गुलाबचन्द नागौरी रा 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई–जंजाळ', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्याबिक्री' अर नारायणदास सारड़ा रौ 'बाल ब्याव को फोर्स' आद नाटक सामाजिक अबखायां नै लेय'र रचीज्या।

इणरै पछै केई नाटककार न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र नाटक लिख्या। श्रीनारायण अग्रवाळ रा 'कलियुगी कृष्ण रुकमणि नाटक', 'अकल बडी क भैंस', 'महाभारत को श्रीगणेश', 'विद्याउदय नाटक', सूर्यकरण पारीक रौ 'बोळावण', श्रीनाथ मोदी रौ 'गोमा जाट', गिरधारी लाल व्यास रौ 'प्रणवीर प्रताप', डॉ. नारायण विष्णु जोशी रौ 'जागीरदार', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्या बिकरी', मदनमोहन सिद्ध रौ 'जयपुर की ज्योणार', आज्ञाचन्द्र भंडारी रौ 'पन्नाधाय', भरत व्यास रौ 'ढोला मरवण', 'रंगीलौ मारवाड़', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' रौ 'तास रौ घर', बद्रीप्रसाद पंचोली रौ 'पाणी

पैली पाळ', फूलचन्द्र रौ 'बिकाऊ टोरड़ौ', सत्येन जोशी रौ 'मुगती बंधण', अर्जुनदेव चारण रा 'दो नाटक आज रा', 'धरमजुद्ध', 'मुगती गाथा', 'जमलीला', 'जेठवा ऊजळी', 'बोल म्हारी मछली इत्तौ पांणी', 'सत्याग्रह', डॉ. ज्योतिपुंज रौ 'कंकू कबंध', लक्ष्मीनारायण रंगा रा 'बहूरूपियौ', अर 'पूर्णमिद्म' आद नाटकां रौ सिरजण हुयौ।

नाट्यसास्त्र री चावी विधा है– **अेकांकी**। इणरौ चलन पैली पिछमी देसां में रैयौ, पछै भारत में भी आ विधा घणी चावी हुयी। राजस्थानी री पैली अेकांकी शोभाचंद जम्मड़ री 'वृद्ध विवाह विदूषण' मानी जावै। नाटक मांय कथावस्तु मोटी हुवै, पात्रां री संख्या बेसी हुवै जदकै अेकांकी इण सूं छोटी हुया करै। संस्कृत में इणनै रूपक मान्यौ गयौ है। इणमें कथाक्रम, पात्रां री संख्या अर उद्देस्य सरूप भी अपेक्षाकृत मोटौ नीं हुवै। अभिनीयता में भी बगत कमती ही लागै, इण कारण इणनै अेकांकी कैवै। श्रीनाथ मोदी री अेकांकी 'गांव सुधार या गोमा जाट' अर सूर्यकरण पारीक री 'बोळावण' सरुआती दौर री मानी जावै। इणरै पछै 'सामधरमा माजी' (लक्ष्मीकुमारी चूंडावत), 'देस रै वास्तै' (आज्ञाचंद भंडारी), 'जय जलमभोम (धनंजय वर्मा), 'डाक्टर रौ ब्याव' (डॉ. गोविन्दलाल माथुर), 'तोप रौ लाइसेंस' (दामोदर प्रसाद शर्मा), 'रगत अेक मिनख रौ' (सुरेन्द्र अंचल), 'मिनख' (हनुमान पारीक), 'छोरी फेल कियां हुई बैनजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'कफन' (नागराज शर्मा) जैड़ी अेकांकियां मांय विसयां री विविधता देखण नै मिलै अर वांरै कारण अै आपरै पाठक रै हियै तांई पूगै।

साहित्यकार आपरी कलम सूं जद सबद चित्राम उकेर'र आपरी भावनावां री अभिव्यक्ति पाठकां सांम्ही करै उणनै **रेखाचित्राम** कैईजै। जिकौ काम अेक चित्रकार आपरी तुलिका अर रंग रै स्सारै सूं करै वौ ईज काम साहित्यकार आपरी कलम अर सबदां सूं करै। रेखाचित्राम नै अंग्रेजी में 'स्केच' कैयौ जावै। रचनाकाल विगत री दीठ सूं राजस्थानी में रेखाचित्राम रचीजण री परम्परा सन् 1946–47 रै लगैटगै हुयी। भंवरलाल नाहटा रौ 'लाभू काकौ' इण विधा री पैली रचना मानीजै। आजादी पछै इण विधा माथै सांतरौ काम हुयौ है। इणरै पछै 'जूंना जीवता चितराम' (मुरलीधर व्यास), 'सबड़का' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'बानगी' (भंवरलाल नाहटा), 'उणियारा', 'ओळखांण', 'मिनखां री माया' (शिवराज छंगाणी), 'अटारवां' (ब्रजनारायण पुरोहित), 'बारखड़ी' (वेद व्यास), 'यादां रा चितराम' (डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत), 'उणियारा ओळूं तणा' (अस्तअली खां मलकांण), आद रेखाचित्रामां री फूठरी परम्परा सांम्ही आयी। ओळूं रै आधार माथै जद रचनाकार आपरी भावनावां अर विचारां नै सहजता सूं पाठकां सांम्ही राखै, तौ उणनै **संस्मरण** रौ नांव देईजै। संस्मरणां रौ आधार मिनख, घटना, जात्रा आद होय सकै। डॉ. नेमनारायण जोशी रौ 'ओळूं री अखियातां', डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'ओळूं री आरसी', मनोहर सिंह राठौड़ रौ 'यादां रौ झरोखौ', अन्नाराम सुदामा रौ 'आंगण सूं अर्नाकुलम' अर 'दूर दिसावर' जैड़ा संस्मरण सिरै है।

'रिपोर्ट' रौ विकसित रूप **रिपोर्ताज** साहित्यिक विधा रौ रूप लियौ। कम सूं कम सबदां मांय विवरण प्रस्तुत करणौ रिपोर्ताज री सफळता मानीज्यौ है। राजस्थानी साहित्य मांय रिपोर्ताज विनोद सोमानी हंस रौ 'अेक दिन आपरौ', कुशलकरण रौ 'आवौ हथाई करां', रामनिवास रौ 'तीन बयान', पुरुषोत्तम छंगाणी रौ 'हाथ करींदौ दिल रौ दरियाव', माधव शर्मा रौ 'बजार पट्टै', 'चौड़ै जेब पट्टै', मुरलीधर शर्मा रौ 'नगर मगरै रौ', 'अजबघर मनड़ै रौ' आद आवै।

जीवनी अर आतमकथा रै क्षेत्र मांय राजस्थानी रचनाकारां री कलम सुस्त रैयी।

'**जीवनी**' अर '**आतमकथा**' जैड़ी रचनावां घणी कोनी आयी। 'आपणा बापूजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'शिवचन्द्र भरतिया' (डॉ. किरण नाहटा), 'देस रा गौरव', 'भारत रा निरमाता' (दीनदयाल ओझा), 'महावीर री ओळखाण' (शान्ता भानावत), 'महापुरसां री जीवणियां' (गोविन्द लाल माथुर), 'भगवान महावीर' (डॉ. नृसिंह राजपुरोहित) जैड़ी रचनावां सांम्ही आयी है। मनोज कुमार स्वामी री आतमकथा 'खेचळ अर खेचळ' आतमकथा रै लेखै नूंवी पहल कैयी जाय सकै।

राजस्थानी मांय टाबरां सारू भी गद्य–साहित्य रौ सिरजण हुयौ है। आज इण सारू घणौ ई काम हो रैयौ है। इण पेटै बात करां तौ राजस्थानी **बाल–साहित्य** री स्थिति ठीकठाक मान सकां। विजयदान देथा री 'बातां री फुलवाड़ी' (भाग–2) में टाबरां सारू पसु–पंखेरुवां री रोचक कथावां है। इणी भांत राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'टाबरां री बातां', 'हुंकारौ दो सा', अन्नाराम सुदामा रौ बाल–उपन्यास 'गांव रौ गौरव', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र, रौ बाल नाटक 'राजा सेखचिल्ली', करणीदान बारहठ री रचना 'झिंडियौ', बी. एल. माली 'अशांत' रा बाल उपन्यास 'बिलाणियौ दादौ' अर 'दूधिया दांत', मनोहर सिंह राठौड़ री कृति 'म्हारी पोथी', दीनदयाल शर्मा री कृति 'बाळपणै री बातां', 'संखेसर रा सींग', सुरेन्द्रसिंह शेखावत री बाल कथाकृति, 'साची सीख' जयन्त निर्वाण री बाल अेकांकी 'खाग्या बाळणजोगा', जेबा रशीद री 'मीठी बातां', डॉ. नीरज दइया री 'जादू रौ पेन', कृष्ण कुमार 'आशु' 'माटी रौ मोल', शिवराज भारतीय री 'रंग रंगीलौ म्हारौ देस' अर 'मुरधर आई बिरखा राणी', हरीश बी. शर्मा रौ बाल नाटक 'सतोळियौ', मदन गोपाल लढ़ा री 'सपनै री सीख', दुलाराम सहारण री 'क्रिकेट रौ कोड', रामजीलाल घोड़ेला रौ 'जादू रौ चिराग,' मनोज स्वामी री 'तातड़ै रा आंसू', कृष्ण कुमार बांदर री 'झगड़ बिलोवणौ खाटी छा', राजूराम बिजारणियां री 'कुचमादी टाबर' अर गौरीशंकर कुलचन्द्र री बालकथा कृति 'पछतावौ' आद कृतियां राजस्थानी बाल–साहित्य नै रातौ–मातौ कर्‌यौ है। इणरै अलावा केई पत्र–पत्रिकावां मांय इण पेटै सिरजण लगोलग हो रैयौ है।

राजस्थानी गद्य रौ विगसाव बगत सारू हुंवतौ रैयौ है। इण बगत गद्य लेखन री परम्परा सांतरी रैयी है। जूनै साहित्य मांय बात अर ख्यात साहित्य मांय खूब लिखीज्यौ है। आजादी रै पछै तौ राजस्थानी रौ आधुनिक काळ घणौ ई सबळ अर सांतरौ हुयौ।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1.सत्यप्रकाश जोशी री चावी पोथी कुणसी है–

(अ) मानखौ (ब) रामदूत

(स) राधा (द) लीलटांस

( )

2. 'बादळी' किण कवि री रचना है?
   (अ) चन्द्रसिंह बिरकाळी (ब) कन्हैयालाल सेठिया
   (स) नानूराम संस्कर्ता (द) कल्याणसिंह राजावत
   ( )

3. राजस्थानी रौ पैलड़ौ उपन्यास कुणसौ है–
   (अ) मेवै रा रूंख (ब) तीडौ राव
   (स) कनक सुन्दर (द) धाड़वी ( )

4. राजस्थानी नाटक अर नाटककार कुणसौ सही है–
   (अ) तास रौ घर– बद्रीप्रसाद (ब) मुगतीबंधण– बी.एल. माली
   (स) जमलीला– यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' (द) धरमजुद्ध– डॉ. अर्जुनदेव चारण
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी री पैली कहाणी अर कहाणीकार कुण है?
2. सबसूं पैली राजस्थानी भासा रौ उल्लेख कुण, किणमें, किण रूप में कर्यौ?
3. डॉ. सीताराम लाळस रै मुजब राजस्थानी साहित्य रौ आधुनिक काळ कद सूं मानीजै?
4. राजस्थानी रौ उद्भव किण अपभ्रंस सूं मान्यौ जावै?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी प्रकृति काव्य माथै आपरी टीप मांडौ।
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य री खास रीतां कांई रैयी, उणरौ खुलासौ करौ।
3. आधुनिक राजस्थानी नाटक परम्परा माथै आपरा विचार राखै।
4. राजस्थानी कहाणी रा प्रमुख कहाणीकारां अर कहाणियां रौ वरणाव करौ।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रै उद्भव अर विकास माथै सांतरौ लेख लिखौ।
2. राजस्थानी गद्य साहित्य री खास–खास विधावां गिणावता थका उणां माथै टीप राखौ।
3. आधुनिक राजस्थानी काव्य री मूल रीतां अर काव्य–रूपां रौ वरणन करौ।

राजस्थानी व्याकरण–रचना

भासा विचारां नै प्रगट करण रौ लूंठौ साधन है। आपरा विचारां नै प्रगट करण रै कारण मिनख सगळी जीवाजूण सूं सिरै मानीजै। मन में विचार आवै कै आखिर भासा ई कठै सूं आई। भासा नै बणावण वाळौ कुण? कांई वैखरी वाणी सूं ईश्वर इणनै बणायौ, कांई सृष्टि सिरजण रै साथै ई मिनख नै वरदान सरूप भासा मिळी? या पछै मिनख खुद उणरौ सिरजण करयौ। इयूं देखां तौ सगळौ जगत ईस्वर रौ सिरज्योड़ौ है, पण उणनै आगै बधावण में निमित्त तौ मिनख ई बणै। वेदां री भासा सूं लेय'र आज तांई रै भासाई विकसाव रा बड़–रूंख नै निजरां पसार देखां अर सोचां तौ जाणां कै भासा नै बणावण वाळौ मिनख ई है। अर आज तौ भासाई विकसाव में मिनख इतरौ आगै बधग्यौ कै गूंगा–बोळा अर आंधा मिनख ई आपरा विचारां नै घणी इधकाई सूं दूजै लग पूगाय सकै या न्यारी लिपि सूं भासा नै परोट'र पढ–लिख'र दूजां रै बरोबर ऊभा होय सकै। सरीर या काया सूं कमजोर है, पण ग्यान में लारै कोनी रैवै। उणरै कनै भासा री आपरी लिपि है अर औ सगळौ जस–अंजस मिनख री सोच नै जावै। भासा संचार रा साधनां में सबसूं महताऊ साधन है जिणरै पाण मिनख आपरै मन री बातां, आपरा विचारां नै दूजै सांम्ही राख सकै। भासा रै मांय ई वा खिमता है जिणसूं मिनख आपरा ग्यान रौ लेण–देण कर सकै। 'भासा' सबद देववाणी संस्कृत रै 'भाष्' धातू सूं बण्यौ। इणरौ अरथ प्रगटाव या दरसाव है। जिणसूं मिनख आपरा विचारां अर भावां नै दरसावै या प्रगट करै, उणनै भासा कैवै। विचारां नै प्रगट करण रौ लूंठौ साधन है भासा। संस्कृत सबसूं जूनी भासा मानीजै, ज्यूं वेदां सूं जूनां कोई ग्रंथ कोनी। संस्कृत सूं ई पालि, प्राकृत, अपभ्रंस आद भासावां सूं आज री आधुनिक भासावां रौ जलम होयौ उणमें राजस्थानी अेक है। राजस्थानी भासा री आपरी व्याकरण है। व्याकरण सूं भासा री पारख करीजै, कूंत हुवै। भासाई व्याकरण रा आपरा कीं नियम होवै। भासा री पकड़ व्याकरण बिना नीं आवै।

किणी ई भासा रै व्याकरण–ग्रंथां में मोटै रूप सूं तीन तत्त्वां माथै विचार करीजै– वरण, सबद अर वाक्य। राजस्थानी री आपरी वरणमाळा है। सबद अर ध्वनियां है। इण रा व्याकरण ग्रंथां में संज्ञा, सरवनाम, लिंग, वचन, कारक, विसेसण, क्रिया, समास, प्रत्यय, उपसरग, अनेकारथी सबद, विलोम सबद, लोकोक्तियां अर मुहावरां सगळां रौ खुलासौ करीज्यौ है। रामकरण आसोपा अर सीताराम लाळस जैड़ा विद्वानां रा व्याकरण सूं राजस्थानी भासा री खरी कूंत करीजै। पोसाळां में पढण वाळा टाबरां वास्तै राजस्थानी रौ ग्यान घणौ जरूरी है। आ मायड़ भासा है।

पर्यायवाची कै समानारथी सबद

मायड़ भासा री खिमता नै जाणण वास्तै अेक जैड़ा अरथ नै प्रगट करण वाळा कीं समानारथी सबदां री बात अठै करणी चावूं, जिणां नै आज री भासा में पर्यायवाची सबद कैवां। किणी भाव, विचार या वस्तु विसेस रौ ग्यान करावण वास्तै, वरणाव वास्तै, समझावण वास्तै, अेक ई सबद नै न्यारा–न्यारा ढंग सूं बतावण री दरकार पड़ै। वाक्य में हरेक बार उणीज सबद रौ प्रयोग रैय–रैय'र नीं करीजै, उणरै जैड़ौ उणी रै अरथ वाळौ नूंवौ सबद काम में लेवण सूं भासा सिमरथ बणै। भासा री इधकाई अर फूटरापै में बधापौ करै उणरा सबद। अै समानारथी सबद ई पर्यायवाची सबद है। कीं पर्यायवाची सबदां रा दाखला अठै दिरीज रैया है–

आकरौ – खारौ, तेज, तातौ, रीसाळू, करड़ौ
अगन – आग, वैसनर, हुतासण, पावक, अनळ
आंख – नैण, लोचन, चख, नेतर, द्रिग
बकरी – छाळी, टाट, अजा, घोनी, बकरड़ी
बादळ – जळहर, मेघ, अभ्र, बळाहक, अभ्र
बांदरौ – लंगूर, वानर, कपि, माकड़, मरकट
बुद्धि – मेधा, मति, समझ, अकल, बुध
भंवरौ – भ्रमर, मुधकर, सारंग, चंचरीक, भ्रंग
भालौ – नेजो, सेल, त्रभाग, कूंत, बरछौ
चांद – चन्द्र, ससि, मयंक, इन्दु, कळानिध
फूल – कुसुम, सुमन, पुहुप, पुसप, प्रसून
गढ – किलौ, कोट, भुरजाळ, दुरग, रावळौ
गाय – गौ, धेन, सुरभि, स्त्रंगणी, गऊ
घर – सदन, भवन, गेह, निकेतण, धाम
घोड़ौ – पमंग, हैवर, केकांण, हय, पंखाळ
हाथी – गज, गैवर, मैंगळ, कुंजर, वयंड
हिरण – मिरग, कुरंग, मिरगलौ, ऐण, सारंग
जोधौ – सूरमा, भड़, सुभट, वीर, सूर
कटारी – धाराळी, त्रिजड़, बाढाळ, जमडाढ, अणियाळी
कमल – पदम, अरविंद, पंकज, पुण्डरीक, कुसेसय
किरण – रश्मि, मयूख, कर, मरीची, अंसु
मिनख – आदमी, मानव, मनुज, म्रितलोकी, नर
मूरख – मूढ, मतिमंद, गिंवार, जड़, सठ
मोर – मयूर, सारंग, सिखी, कळापी, केकी
नदी – तरंगणी, परबतजा, नीझरणी, तटणी, वेणी
पवन – बायरो, वायु, मारुत, समीरण, हवा
पहाड़ – डूंगर, भाखर, परबत, सैल, गिर, अनड़
पंखेरू – विहग, खग, दुज, अंडज, पंछी
पाणी – नीर, जळ, उदक, पय, सलिल
राजा – महीपत, अधपत, भूपाळ, भूप, न्रप
रात – निसा, रजनी, तमसा, विभावरी, खिपा
रूंख – पेड़, बिरछ, ब्रख, विटप, द्रुम
स्त्री – अबला, नार, महिला, तिरिया, वलभा
समुद्र – सिंधू, सागर, समदर, उदधि, अरणव
सरप – नाग, विखधर, पनंग, व्याळ, फणी
सिंघ – सादूळ, केहरी, लंकाळ, म्रगपत, मयंद
सूर – डाढाळौ, वाराह, दांतड़ियाळ, अेकल, गिड़

सूरज – सूर्य, भांण, पतंग, आदीत, मारतंड, भानु
सेना – फौज, दळ, कटक, वाहणी, चतुरंगणी
तरवार – क्रपाण, बीजळसार, खाग, करवाळ, चन्द्रहास
तीर – सर, बांण, नाराच, पंखाळ, विसिख
ऊंट – करहौ, महीयौ, पांगळ, डगरौ, पाकेट
वन – अरण्य, जंगळ, अटवी, रोही, कानन

विलोम सबद

रात	–	दिन	डांफर	–	लू
चोखौ	–	भूंडौ	बड़णौ	–	निकळणौ
आभौ	–	पताळ	दोरौ	–	सोरौ
आवणौ	–	जावणौ	आगलौ	–	लारलौ
जलम	–	मरण	सुर	–	असुर
भलौ	–	बुरौ	राग	–	विराग
सांच	–	कूड़	सियाळौ	–	ऊनाळौ
गाय	–	बळद	विजोग	–	संजोग
सैण	–	दुसमी	नैड़ौ	–	अळगौ
बेटौ	–	बेटी	मोड़ौ	–	बेगौ
आंधौ	–	सूझतौ	धणी	–	लुगाई
पूनम	–	अमावस	फूटरौ	–	कोजौ
सूरज	–	चांद	गुण	–	औगुण
काळ	–	सुकाळ	लोक	–	परलोक
रोवणौ	–	हंसणौ	खावणौ	–	पीवणौ
अगुणौ	–	आथुणौ	गाडर	–	मींढौ
धुरावू	–	दिखणाद	निरोगी	–	रोगी
नफौ	–	नुकसाण	पगांथियौ	–	सिरांथियौ
बाळक	–	बूढौ	बिखरणौ	–	जमणौ
आपरौ	–	परायौ	सेवक	–	स्वामी
जाण	–	अजाण	राजा	–	रंक
काळौ	–	धोळौ	अंवळौ	–	संवळौ
अंत	–	आदि	ठमणौ	–	बैवणौ
संगत	–	असंगत	उजास	–	अंधारौ
विस	–	इमरत	दातार	–	कंजूस
खारौ	–	मीठौ	ऊंट	–	सांढ
मान	–	अपमान	आथण	–	दिनूगै
गुण	–	औगुण	रोग	–	निरोग
सुभ	–	असुभ	ख्यात	–	कुख्यात
जस	–	अपजस	जीवण	–	मरण

मुहावरा अर ओखाणां

मुहावरा अर ओखाणा भासा रा प्राण है। अै भासा मांय गागर में सागर रौ काम करै। आं रै मांयनै गैरौ अरथ अर जीवण रा खारा–मीठा अनुभव हुवै। जीवण में घटित घटनावां अर सांची बातां जुगां–जुगां तांई मानखै नै सीख रै रूप में नीति रै रूप में तौ व्यवहार पख नै उजागर करण रा लोक वाक्य, ओखाणा, कैवत रै रूप में लोकचावा होय जावै। आपरी भासा नै असरदार बणावण वास्तै मानखौ आं मुहावरा अर ओखाणां रौ प्रयोग करै। मुहावरौ अरबी भासा रौ सबद है। उर्दू सूं राजस्थानी में अर दूजी भासावां में इणरौ प्रयोग होवण लागौ। अरबी में इणरौ अरथ बोलचाल में काम आवण वाळौ कथन है। मुहावरौ सबदां रौ अैड़ो बंध है जिकौ आपरी खिमता, भावां, बुणगट, सरसता, सहजता, सारगुण, भासा में गति आद गुणां सूं साधारण वाक्य नै असाधारण अर असरदार बणाय देवै।

'ओखाणा' सूं सीधौ अरथ लोक री उक्ति है जिकी मिनख रा हिरदा सूं निकळै अर आगै वाळा रा हिया में ई उणी'ज भांत आपरौ भाव छोडै। भासा मं तीखा बाण रौ काम अै करै। आज आपां आंनै किताबां में पढां अर कंठां ढाळण रा जतन करां जदकै अै तौ पैली सूं ई गांवाई मानखै रै कंठां में आद अनाद काळ सूं जींवती है। वांनै पढ'र याद करण री दरकार कोनी। अै उक्तियां तौ उणां रै जीवण रौ अंग है। भासा में रच्योड़ी–पच्योड़ी है। हरेक कहावत या ओखाणा रै लारै अेक घटना या बात जुड़्योड़ी होवै। ओखाणा अर मुहावरा में कीं भेद है। ओखाणा अपणै आप में पूरण वाक्य है, जदकै मुहावरौ वाक्य रौ अंस है। ओखाणा रौ प्रयोग हरमेस अेक अरथ में हुवै जदकै मुहावरा में क्रिया पदां, क्रियार्थक संज्ञा में बदळाव कस्यौ जाय सकै। ओखाणा अरथ री दीठ सूं आपै ई पूरण होवै जदकै मुहावरा वाक्य माथै आश्रित होवै। वाक्य रै साथै जुड़ण सूं उणरौ रूप अर ठौड़ सवाई होवै। पूरण वाक्य होवण रै कारण ओखाणां में अरथबोध होवै, प्रसंग समेत घटना या व्यक्ति री जांणकारी उणसूं मिळै, पण मुहावरा वाक्यांस होवण रै कारण किणी विसेस अरथ रै रूप में प्रयोग होवै।

ओखाणां रौ रूप मुहावरां सूं बडौ होवै। जीवण री हरेक अंग, प्रक्रति अर घटना रौ वरणाव आं ओखाणां अर मुहावरां में करीज्यौ है। कीं मुहावरा अठै दाखला सरूप दिरीज रैया है–

1. अंग–अंग मुळकणौ	–	घणौ राजी होवणौ
2. जीमणौ हाथ बणणौ	–	मदद रूप में काम आवणौ
3. अकल रौ दुसमी	–	मूरख, बेवकूफ, बिना सोच्यां काम करणौ
4. अकल रा घोड़ा दौड़ाणा	–	सोचण में घणी खैचल करणी, अटकळां लगाणी
5. आंख दिखावणौ	–	डरावणौ, रोब झाड़णौ
6. आंख्यां माथै पड़दौ पड़णौ	–	लोभ रै कारण सांच नीं दीखणौ
7. हाथ रौ मेल होवणौ	–	तुच्छ या त्याग करै जैड़ी वस्तु
8. माथौ मूंडणौ	–	मूरख बणाय'र ठगणौ
9. हाथ पीळा करणा	–	बेटी रौ ब्याव करणौ
10. पाणी–पाणी होवणौ	–	लाजां मरणौ, लजखाणौ पड़णौ
11. पाणी वाळा झाग	–	बेगा ई खतम होवण वाळा, दिखावौ, झूठ
12. घाणी रौ बळद	–	सैंग दिन काम में लाग्योड़ौ रैवणौ

13. जींवती माखी गिटणी – अन्याय सहन करणौ
14. ऊंदरा थड़ी करै – घर में सामान नीं होवणौ, निरधनता होवणी
15. घोड़ा बेच'र सोवणौ – नेहचै री नींद, कीं डर–भौ नीं होवणौ
16. सांप नै दूध पावणौ – दुस्ट रौ उपकार करणौ
17. मिन्नी रै भाग सूं छींकौ टूटणौ – संजोग सूं काम बणणो
18. आभै में फूल उगावणा – डींग मारणौ, कोरी कल्पना करणी
19. कोढ में खाज होवणी – अेक दुख माथै दूजौ दुख आवणौ
20. कूवै भांग पड़गी – सगळां री मत मारीजणी, सब री बुध बावळी होवणी।
21. ठोलै सागै कवौ देवणौ – ताना मार–मार' जीमावणौ
22. रिपियै कवौ खवावणौ – आदर अर अपणायत सूं जीमावणौ
23. मन चंगा तौ कठौती में गंगा– मन साफ होवणौ, निरमळ होवणौ
24. बैठां सूं बेगार भली – ठालां बैठां बिचै कम दाम में कीं काम करणौ
25. दौड़ता चोर री लंगोट ई आछी– नीं मिळै उणसूं मिळै जकौ ई चोखौ
26. मेंडकी नै जुकाम होवणौ – काम करण वास्तै नखरा करणौ
27. मूंडै देखी प्रीत – दिखावटी प्रेम करणौ
28. मूंज बळगी पण बट नीं गयौ– प्रतिष्ठा गयां पछै ई घमंड कायम राखणौ
29. चमड़ी जाय पण दमड़ी न जाय– घणौ कंजूस होवणौ
30. हाथी रा दांत खावण रा और दिखावण रा और – कैवै कीं अर करै कीं
31. बिंधग्या सो मोती – भाग्य सूं जो मिळियौ उणनै मान सूं अंगेजणौ
32. डाकण बेटा लेवै कै देवै – दुस्ट सूं भलांई री आस नीं करणी
33. डूंगर तौ अळगा सूं रळियावणा लागै – मोटा मिनखां सूं काम पड़्यां ठाह लागै
34. बांडी माथै पग देवणौ – दुस्ट सूं राड़ मोल लेवणी, जाण'र मौत बुळावणी
35. बेळा रा बायोड़ा मोती नीपजै– समै पर कर्‌योड़ौ काम आछौ फळ देवै
36. पूत रा पग पालणै दीसै – लखणां रौ पतौ चालणौ
37. ऊंट रै मूंडै में जीरौ – कीं असर नीं होवणौ
38. हाथी लारै कुत्ता भुसता रैवै – परवाह नीं करणी, आपरा हाल में मस्त रैवणौ
39. आंख रौ तारौ – लाडेसर, व्हालौ लागणौ
40. राम प्यारौ होवणौ – सुरगवासी होवणौ
41. कैयां कुंभार गधै नीं चढै – बात नीं मानणी
42. आंधां में काणौ राजा – मूरखां में अल्पबुद्धि वाळै री पूछ होवणी
43. घर रौ भेदू लंका ढावै – आपसरी री फूट में पोल खोलणी
44. नांव मोटा दरसण खोटा – कूड़ौ जस, गुणां री खामी
45. रिपियै बिना बुध बापड़ी – मिनख री समझ रिपियां सूं तौलीजै।
46. दूध रौ दूध–पाणी रौ पाणी – न्याव करणौ
47. धोळौ धोळौ दूध जाणणौ – सबनै आपरै सरीखौ जाणणौ, हरेक रौ विस्वास करणौ
48. दांत भींचणा – दुख नै सहन करणौ
49. बाकौ फाटणौ – अचूम्भौ करणौ
50. आंख्यां फाटणी – विस्वास नीं होवणौ, अचरज होवणौ

51. आप मर्‍यां जुग परळै – मर्‍यां पछै कुण देखण नै आवै, लारली चिंता नीं
52. आप मर्‍यां ई सुरग मिळै – खुद रौ काम खुद नै ई करणौ पड़ै
53. कांणी रौ काजळ काढणौ – स्वारथ नीं पूरीजै
54. काजळ काढणौ – दगौ करणौ, ठगणौ
55. रीत रौ रायतौ करणौ – परम्परा रौ निभाव
56. पोदीनौ बिखेरणौ – झूठी बडाई, अकल बतावणी

ओखाणां री बानगी

1. घणौ हेत टूटण नै मोटी आंख फूटण नै – सब सरोसरी फाबै।
2. मूंडै रा दांत मूंडै में चोखा लागै – आपरी ठौड़ माथै मान रैवै।
3. घणी गई थोड़ी रैयी जिण मांय'ऊ छिन–छिन जाय– सरीर नासवान है।
4. घरै आयौ मां रौ जायौ – घरै आयोड़ा रौ भाई जियां आदर करणौ
5. जागै सो पावै सोवै सो खोवै – सावचेत होवण रौ लाभ अर आळसी होवणौ हा
6. मूळ सूं ब्याज वाल्हौ लागै – मूल स्थिर धन है, ब्याज रकम नै लगोलग बधावै
7. टाबर खावै हाड बधावै,
   मोट्यार खावै घणौ कमावै,
   बूढौ खावै अेळौ जावै – अवस्था परवाणै खुराक काम आवै
8. बाळकां रौ सी बकरिया चरै – टाबरां नै सरदी नीं लागै, क्यूंकै रमै–कूदै
9. माया थारा तीन नाम फूसो, फरसौ, फरसराम – मिनख रौ मोल पईसां सूं करीजै
10. आई मूंछां किणनै पूछां – मोट्यार होयां टाबर आपरै मन री करै
11. टीटोड़ी समंद उलीचियौ कै परवारां रै पांण – आपरै भाई–सैणां रै साथ सूं थाकल जीव ई मोटौ काम कर सकै। संगळण री बात है।
12. थावर कीजै थापना बुध कीजै वैवार – थरपणा वास्तै शनिवार चोखौ टिकाऊ होवै अर लेण–देण वैवार वास्तै बुधवार
13. आभौ ऊंचौ आंगळी नीं लागै – बस नीं चालै, जोर नीं चालै, परबस होवणौ
14. तेल तौ तिलां सूं निकळसी – पईसौ आसामी कनै ई मिलसी, खिमतावांन सूं खिमता री उम्मीद होवणी।
15. खावणौ मां रै हाथ रौ होवौ भलांई जैर ई
    बसणौ भायां बिचाळै होवौ भलांई बैर ई
    बैठणौ मौकै री छियां, होवौ भलांई कैर ई
    बैवणौ मारग–मारग, होवौ भलांई देर ई – सीख री बात
16. पगां दियोड़ी गांठ हाथां सूं कोनी खुलै – बात–बात में अैड़ौ उळझावणौ कै बात सुळझै ई कोनी।
17. कीं घोड़ां री घटै कीं असवार री घटै – दोनूं पखां रौ भूंडौ लागणौ।
18. पट्टै लिखाई मोठ–बाजरी मांगै चावळ–दाळ – भाग्य में लिख्योड़ौ ई मिळै

19. पंसेरी में पांच सेर री भूल — सारौ ई गड़बड़ झालौ
20. हियै होवै जिकी होठां आवै — मन री बात कैयां बिना नीं रैईजै
21. हाथ पोलौ तौ जगत गोलौ — पईसा खरचणियै री सगळा हाजरी भरै।
22. कुंवारी रै सौ घर सौ वर — सगपणां री पड़ताळ में निस्चै नीं होवणौ
23. चांच दी वौ चुग्गौ देवै — ईस्वर सगळां नै पोखै
24. डाकण ही अर ऊंटां चढगी — अन्याय करण में साधन मिळगौ, हूंस बधगी।
25. धान खावै मांटी रौ, गीत गावै बीरै रा — अैसान किणी और रौ अर गुण दूजै रा गावणा। कृतघ्न होवणौ।

उल्थै रौ अभ्यास

नीचै लिख्योड़ा गद्यांसां रौ राजस्थानी में उल्थौ करौ–

1. माता के स्नेह में पिता के समान प्रत्युपकार की वासना भी नहीं है। दया मानो देह–धरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। टूटी–फूटी झोपड़ी में जब मूसलाधार पानी बरस रहा है। फूस का टाट सब ओर से ऐसा टपकता है कि कहीं तिल–भर भी जगह नहीं बची है। कंगाली के कारण इतना कपड़ा–लत्ता पास नहीं कि आप ओढ़े, आधी से अपने दुधमुँहे बालक को ढांपे माता उसको छाती से लगाए हुए हैं। अपने प्राण और देह की तनिक भी चिन्ता नहीं है। किन्तु वात और वृष्टि से पुत्र की रोगी और अस्वस्थ दशा में पलंग के पास बैठी मनमारे उसका मुँह ताक रही है। रात को नींद और भोजन भी दुष्कर हो गया है। भांति–भांति की मिन्नतें मनाती है। यह माता ही है, जो पुत्र के स्वाभाविक स्नेह में इतने दुःख सहती है।

2. धरती माता की गोद में जो अमूल्य निधियां भरी हैं जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उससे कौन परिचित न होना चाहेगा। लाखों–करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन–रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस–पीस कर अनगिनत प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सब की जाँच–पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले खड़पत्थर कुशल शिल्पियों से संवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भांति के अनगढ़ नग विंध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं।

3. एक राजा शिकार खेलता हुआ जंगल में भटक गया। संगी–साथी पीछे छूट गये। प्यास से व्याकुल राजा एक बुढ़िया की झोपड़ी में गया। बुढ़िया ने अपने खेत के गन्ने का रस निकाल कर कटोरा भरा, उसे राजा को पीने हेतु दे दिया। राजा को वह रस अमृत जैसा लगा। राजा तृप्त होकर चला गया। राजधानी में पहुँच कर गन्ने की खेती पर

उसने भारी कर लगा दिया। संयोग से दूसरी बार भी राजा भटक कर उसी बुढ़िया के पास गया। आज बुढ़िया के गन्ने का रस राजा को उतना मीठा एवं स्वादिष्ट नहीं लगा। राजा ने कारण पूछा तो बुढ़िया ने कहा कि यहाँ के राजा की नीयत खराब हो गई है जिससे रस के मीठास में भी अंतर आ गया है। राजा का सिर लाज से झुक गया।

4. जिनके हृदय में भारत की सेवा के भाव हों या जो भारतभूमि को स्वतंत्र देखने या स्वाधीन बनाने की इच्छा रखते हों, उन्हें उचित है कि ग्रामीण संगठन करके, कृषकों की दशा सुधार कर, उनके हृदय से भाग्य निर्भरता को हटा कर उद्योगी बनाने की शिक्षा दें। कल–कारखाने, रेलवे, जहाज तथा खानों में जहाँ कहीं श्रमजीवी हों, उनकी दशा को सुधारने के लिए श्रमजीवियों के संगठन की स्थापना की जाए, ताकि उनको अपनी अवस्था का ज्ञान हो सके और कारखानों के मालिक मनमाने अत्याचार न कर सकें।
5. बहुमुखी प्रतिभा के धनी रवीन्द्रनाथ ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी विधाओं में लिखा। वे कुशल चित्रकार भी थे। देश–विदेश में उनके चित्रों की कई प्रदर्शनियाँ भी हुईं। संगीत से उनको गहरा और आत्मीय लगाव था। उनकी संगीत रचनाएँ, अपनी विशिष्टता के कारण बहुत लोकप्रिय हुईं। बंगाल में 'रवीन्द्र संगीत' नाम से एक नई संगीत शैली का प्रादुर्भाव हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में भी वे हमेशा नवीनता के पक्षधर थे।
6. एक सेठ ने हवेली चिनवाई। हवेली तैयार हो जाने पर उसमें भित्ति चित्र बनवाए गए। सेठ का एक परिचित ठाकुर हवेली देखने आया तो हवेली के मुख्यद्वार पर एक हथियारबंद पहरेदार का चित्र देखकर बोला कि यह किसका चित्र है। सेठ ने मजाक में कह दिया कि आपके 'बाबोसा' का है। ठाकुर नाराज होने के स्थान पर बोला कि इसके नीचे उनका नाम भी लिखवा दो। सेठ ने चित्र के नीचे नाम भी लिखवा दिया। ठाकुर कुछ वर्षों बाद पुनः सेठ के पास आया। कुशलक्षेम पूछने के बाद ठाकुर ने कहा कि मैं अपने बाबोसा की नौकरी का हिसाब लेने आया हूँ, सो दिलवा दीजिए। सेठ ने पूछा– कैसी नौकरी? ठाकुर बोला– आपकी हवेली बनी तब से मेरे बाबोसा रात–दिन पहरा दे रहे हैं, तभी कोई चोरी–चकारी या डाका नहीं पड़ा। सेठ ने कहा– मैं चित्र मिटवा देता हूँ। ठाकुर ने कहा– ठीक है, आज तक हिसाब कर दीजिए।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'जळहर' सबद किणरौ समानारथी सबद है?

(अ) बादळ (ब) आंख
(स) अगन (द) चांद

( )

2. 'आंख रौ तारौ' मुहावरा रौ अरथ है–
   (अ) सुरगवासी होवणौ (ब) अन्यायी होवणौ
   (स) लाडेसर कै व्हालौ लागणौ (द) रोब झाड़णौ
   ( )

3. 'रिपियां बिना बुध बापड़ी' ओखाणौ किण अरथ में कहीजै?
   (अ) रिपिया अर बुद्ध रौ मेळ कोनी (ब) मूरखां में थोड़ौ समझदार होवणौ
   (स) मिनख री समझ रिपियां सूं तोलीजै (द) रिपियां बिना परबस होवणौ
   ( )

4. 'आदि' सबद रौ विलोम सबद है–
   (अ) आरम्भ (ब) अगवाणी
   (स) अंत (द) निस्सार
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'हुतासण' सबद रा दो पर्यायवाची सबद लिखौ।
2. "अन्याय करण रौ साधन मिळणौ, हूंस बधगी।" इणमें किसौ ओखाणौ कहीजै?
3. "आप मरयां ई सुरग मिळै" मुहावरा रौ वाक्य प्रयोग करौ।
4. 'कायर' रौ विलोम सबद कांई होवै?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पर्यायवाची सबद किणनै कैवै? ऊंट रा तीन पर्यायवाची सबद लिखौ।
2. मुहावरां रौ भासा में कांई महत्त्व होवै। इणनै दाखला सेती समझावौ।
3. ओखाणाां अर मुहावरां में कांई भेद होवै?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा पर्यायवाची सबद लिखौ–
   कमल, घर, गाय, चांद, पाणी, पवन, आंख, फूल, भंवरौ
5. आं सबदां रा विलोम सबद लिखौ–
   काळौ, सांच, अन्याव, रात, अगुणौ, जुलम

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'मुहावरा' रौ अरथ कांई होवै। भासा में इणां रै मैतव अर विसेसतावां रौ वरणाव करौ।
2. भासा सूं आप कांई समझौ। जीवण में भासा रौ महत्त्व अर भासा में व्याकरण रौ मैतव समझावौ।
3. ओखाणां रौ संसार निराळौ है। इणां रौ महत्त्व बतावतां थकां कीं टाळवां ओखाणां सूं आपरी बात पुख्ता करौ।
4. नीचै लिख्योड़ा मुहावरां रा अरथ बतावता थकां इणां रौ वाक्य में प्रयोग करौ।
   (अ) आंख्यां माथै पड़दौ पड़णौ
   (ब) हाथ रौ मैल होवणौ
   (स) घाणी रौ बळद होवणौ
   (द) जींवती माखी गिटणी

(य) कूवै भांग पड़णी
(र) रिपियै कवौ खवावणौ
(ल) आभै में फूल उगावणा
(व) सांप नै दूध पावणौ
(श) कोढ में खाज होवणी
(स) मेंडकी नै जुखाम होवणौ

5. नीचै लिख्योड़ा ओखाणां नै अरथावतां थकां वाक्य प्रयोग करौ–
(अ) मूंडै रा दांत मूंडै ई ओपै।
(ब) जागै सो पावै, सोवै सो खोवै।
(स) बाळकां रौ सी बकरिया चरै।
(द) टीटोड़ी समंद उलीचियौ कै परवारां रै पांण।
(य) आभौ ऊंचौ आंगळी नीं लागै।
(र) तेल तौ तिलां सूं ई निकळै।
(ल) घरै आयौ मां रौ जायौ बाजै।
(व) चोंच देवै जिकौ चुग्गौ ई दे'ई।
(श) डाकण ही अर ऊंटां चढगी।
(स) कंवारी रा सौ घर सौ वर।

राजस्थानी छंद अर अलंकार

छंदसास्त्र री पारिभासिक रूप सूं इधकी–इधकी व्याख्या करीजी है। म्हारी जाण में छंदां रौ जूनौ रूप वेदां री रिचावां मांय अर लौकिक रूप में लोक री जुगां चावी विधा लोकगीतां में निजर आवै। लोकगीतां री भलांई सास्त्रीय परिभासा कोनी, पण लय, सुर, ताल, यति अर गति रै बिना अै गायीजै ई कोनी। काव्यसास्त्र रै मुजब वरण, मात्रा, यति, गति, लय, सुर, तुकबंदी रो विचार करनै जिकी सबद–रचना करी जावै उणनै छंद कैवै। छंद तय कस्योड़ा वरणां अर मात्रावां में रच्योड़ी अेक पद्य रचना है। इणरी व्यत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं मानीजै। इणरो अरथ आवृत्त करणो, रक्षित अर राजी करणो हुवै। डिंगळ गीत छंद राजस्थानी छंदसास्त्र री इधकाई है। इणरी मठोट न्यारी निकेवळी है अर इण रा केई भेद–उपभेद है। डिंगळ छंदां री छटा सूं छंदसास्त्र घणौ सिमरध होयौ है।

राजसभावां में राजकवियां री विरुदावली रा छंद, जुद्ध रा मैदान में वीरां री हूंस जगावण खातर वीरता रा छंद अर कीरत रा बखाण कै पछै जस–अपजस नै उजागर करण वाळा छंदां सूं राजस्थानी काव्य भर्‌योड़ौ है। स्तुतिपरक रचना ई छंद कहीजै। स्तुति आपरै इस्ट देवता री हुवौ कै आपरै आश्रयदातावां री, जिणमें उणां रै गुणां रा बखाण करीजै, छंदां री ओळी में आवै।

'राव जैतसी रौ छंद', 'रणमल्ल छंद', 'माताजी रा छंद', 'गोरखनाथजी रौ छंद', 'पाबूजी रौ छंद' आद रचनावां में नायक रै चरितर रो पुरजोर वरणाव हुयौ है। 'पद्य' अर 'छंद' अेक अरथ में ई लिरीजै। छंद रौ अेक दूजौ अरथ बांधणौ (बंधन) ई हुवै। छंदां रै नियमां में बंध'र कविता नै ठैराव, वेग, राग अर फूटरापौ मिळै। नदी जिण भांत आपरै दोय किनारां में बंधियोड़ी वेग रै साथै तौ कदैई उतरती–चढती, मंथर गति सूं तय मारग माथै निरबंध बैवती समुंदर में रळ जावै, उणी'ज भांत छंद आपरी कविता में काव्य साहित्य रूपी महा समुंदर री छौळां में रम जावै।

छंदां रौ महत्त्व

छंदां रै मांय थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता है। गूढ अर गैरौ अरथ समझावण री खैचल अै करै। संगीतात्मकता रौ गुण होवण रै कारण सुणण में आछापण लागै। गेयता रै कारण वातावरण नै सरस बणावै। आं छंदां रै मीठास में मानखौ घड़ी भर आपरा दुखड़ा भूल'र सुख री घड़ियां चितारै। केई छंद हियै रा कंवळा, मीठा, निरमळ भावां नै उजागर करण वास्तै बरतीजै। माधुर्य अर प्रसाद गुणां सूं लबालब होयोड़ा आं छंदां री मानखै नै घणी दरकार आज ई है। क्यूंकै इण आरथिक अर भौतिक जुग रौ मिनख सांति चावै। इण अपरोगी दुनिया में अपणायत चावै। अेकलौ बैठौ मिनख रेडिया, टेपरिकारडर सूं अैड़ा छंदां नै सुण'र जीवण री नीरस घड़ियां नै सरस बणाय सकै।

ओज गुणवाळा वीर छंदां नै सुणां तौ आज ई उणियारा माथै वीर–भावां रा सैलाण देख्यां बिना नीं रैवां। छंदां में वा ताकत है, बूतौ है कै जिण रस रौ छंद बोलीजै या पढीजै, उठै उणी'ज तरै रै भावां रौ वातावरण बण जावै। राग–रागणियां रौ आं छंदां सूं गैरो जुड़ाव है। सोरठ, मांड, मल्हार, राग रा छंद आपरै हेताळू रै हियै नै जगावण वाळा है। आं छंदां री महिमा बखाण करां जित्ती ई थोड़ी है।

छंदां रा भेद

छंदां रा केई भेद मानीजै, पण मोटै रूप

सूं छंद दोय भेदां में देखीजै–

1. मात्रिक छंद अर 2. वरणिक छंद।

1. मात्रिक छंद

जिण छंद में मात्रावां री गिणती करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। मात्रावां री गिणती सूं छंदां री ओळ्यां में यति, गति अर लय नै परोटतां जिकी रचना करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। दूहौ, चोपाई, रोला, उल्लाला, छप्पय, गीत, हरिगीतिका आद मात्रिक छंदां रा दाखला है।

2. वरणिक छंद

जिणमें वरणां री गिणती रै मुजब यति, गति बरतीजै अर मात्रावां रै आधार माथै काव्य रचना रौ सिरजण करीजै, उणनै वरणिक छंद कैवै। भुजंगी, भुजंगप्रयात, त्रोटक, सवैया, कवित्त आद वरणिक छंदां रा दाखला है।

आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां री मात्रावां अर वरणां री गिणती मुजब तीन भेद बखाणीज्या है–

(i) सम छंद : जिणमें छंदां रै चरणां में मात्रावां या वरणां री गिणती बराबर होवै। अेक समान मात्रावां या वरणां री गिणती वाळा छंदां नै सम छंद कैवै। चौपाई सम छंद है।

(ii) विसम छंद : जिणमें छंदां रै चरणां री मात्रा या वरण न्यारा–न्यारा होवै, अेक समान नीं होवै वौ विसम छंद है। छप्पय, कुंडळिया विसम छंद है।

(iii) अरघसम छंद : आं छंदां में पैला अर तीजा, दूजा अर चौथा चरणां री मात्रावां या वरणां में समानता होवै। दूहौ अरघसम मात्रिक छंद रौ चावौ दाखला है। आं रै टाळ केई गणबद्ध छंद (भगण, मगण), मुक्तक छंद, साधारण छंद, दंडक छंद रै रूप में ई ओळखीजै। जद छंदां री गैराई सूं व्याख्या करां तो अै रूप ई साम्हीं आवै पण मूळ में छंदां रा दोय भेद है, वै है मात्रिक छंद अर वरणिक छंद।

दूहौ छंद

दूहौ अपभ्रंस साहित्य सूं लेय'र हिन्दी अर राजस्थानी साहित्य रौ सिरमौड़ छंद रैयौ है। दूहै री बडाई में केई दूहा कहीज्या है। दूहै री महिमा कविवर सेठियाजी रै सबदां में इण भांत बखाणीजी है–

देस नीं मरुदेस सो, म्रगमद जिसो न गंध।
सुरसत रै भंडार में, दूहै जिसो न छंद।।

दूहौ अरघसम मात्रिक छंद है। इण रा पांच भेद छंदसास्त्र में बताया जावै– सुद्ध दूहौ, बडौ दूहौ, तुंबेरी दूहौ, सोरठियौ दूहौ अर खोड़ौ दूहौ। राजस्थानी साहित्य में सुद्ध दूहौ अर सोरठियौ दूहौ घणा बरतीजै–

(i) सुद्ध दूहौ : इणरै पैलै अर तीजै (विसम) चरणां में 13–13 मात्रावां अर दूजै अर चौथै (सम) चरणां में 11–11 मात्रावां हुवै। दूजै अर चौथै चरण री तुक पण मिळै। इणरै चरणान्त में गुरु–लघु आवै। दाखलौ–

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

(ii) सोरठियौ दूहौ : दूहै रौ उलटफेर सोरठियौ दूहौ कहीजै। इणरै पैलै अर तीजै चरणां में 11–11 मात्रावां अर सम चरणां (2–4) में 13–13 मात्रावां आवै। इण मांय विसम चरणां (1–3) री तुक मिळै। सोरठ (सौराष्ट्र) प्रदेस में घणौ परोटीजण रै कारण इणरौ नाम सोरठौ अर गेयता रै कारण सोरठियौ पड़ियौ। राजस्थानी साहित्य में सम्बोधन काव्य में सोरठां रौ ई घणकरौ प्रयोग हुयौ है। सोरठा रै वास्तै अेक लोकचावौ दूहौ कथीज्यौ है–

सोरठियौ दूहौ भलौ, भल मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

सोरठिया दूहा रौ दाखलौ–

बखत जावसी बीत, जासी बात न जगत सूं।
गासी दुनिया गीत, चोखा भूंडा चकरिया।।

अलंकार

छंद–अलंकारां में राजस्थानी साहित्य री निकेवळी ओळखांण रैयी है। राजस्थानी काव्य में सगळा लोकचावा अलंकारां जथा– अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, वक्रोक्ति आद रौ भरपूर प्रयोग मिळै। डिंगळ गीत छंदां रै ज्यूं राजस्थानी रौ आपरौ अलंकार वैण–सगाई मौलिक सबदालंकार है, जिणरा केई भेद मिळै। कविता रूपी कामणी रौ सिणगार अलंकार रूपी गैणां–गांठां सूं ई करीजै। अलंकार काव्य रौ गैणौ गिणीजै। इणरै प्रयोग सूं काव्य में इधकाई आवै, काव्य असरदार निजर आवै। काव्य री सोभा बधै। काव्य रूपाळौ लागै। आचार्य भामह, आचार्य दण्डी जैड़ा काव्य– सास्त्री अलंकारवादी सिद्धांत में अलंकारां री थाती नै थिरपत करी है। सार रूप में औ ईज कैयौ जाय सकै कै सबद, अरथ अर अलंकार रै मेळ सूं ई काव्य रौ रूप उजागर हुवै। दूजै सबदां में अलंकार ई काव्य रौ सिरै रूप अर उणरौ फूटरापौ है। इण भांत आछी बातां अपणावण री राजस्थानी साहित्य में रीत रैयी है। इण परम्परा रै कारण अठै अलंकारां री छटा ई अलायदी निजर आवै। राजस्थानी रौ चावौ अलंकार वैण–सगाई अठै रा कवियां री कुसळाई अर कलम री सबळायी बतावै।

वैणसगाई अलंकार

वैणसगाई राजस्थानी रौ मौलिक अर महताऊ अलंकार है। डिंगळ काव्य में इणरौ प्रयोग सगळा काव्यदोसां नै मिटावै। डिंगळ रा चावा–ठावा कवियां इणरौ प्रयोग आपरा काव्य में कर्‌यौ। पारम्परिक छंदां रै साथै नूंवां छंदां में ई वैणसगाई रौ प्रयोग करीजै। काव्य में नाद–सौंदर्य अर मीठास रौ आधार वैणसगाई है। डिंगळ में इणरौ प्रयोग सुभ मानीजै। वैणसगाई रौ अरथ है वरणां रौ सम्बन्ध। अेक जैड़ा सबदां या आखरां रौ संबंध या मेळ। दोय परिवारां रै हाड–बैर नै मेटण वास्तै सगाई सम्बन्ध किया जावता, जिणसूं मेळ–मिळाप व्है जावतौ। उणी'ज भांत वरणां रा संबंध सूं ई काव्य में रस आवै।

'रघुनाथरूपक' जैड़ै ख्यातनाम छंद–सास्त्रीय ग्रंथ रा रचनाकार मंछाराम सेवग रौ वैणसगाई रै वास्तै औ विचार उल्लेख जोग है–

खून कियां जांणै खलक, हाड बैर जो होय।
वयण सगाई वैण तौ, कलपत रहै न कोय।।

वीररसावतार कविवर सूरजमल मीसण आपरी 'वीरसतसई' में वैणसगाई नै रस नै पोखण रौ आधार मानतां थकां वीररस री कविता में दोस निवारण री बूंटी (ओखद) मानै–

वैणसगाई वाळियां, पेखीजै रस पोस।
वीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

राजस्थानी काव्य में हर विसय री रचनावां अर हरेक काळ में इणरौ प्रयोग होयौ है। वैणसगाई अलंकार रा केई भेद मिळै। आं में घणचावा तीन भेदां री बात अठै करणी चावूं– 1. आदिमेळ, 2. मध्यमेळ, 3. अंतमेळ।

1. आदिमेळ : किणी छंद या रचना रै चरण रौ पैलौ आखर उणी'ज चरण रै आखरी सबद रै पैलै आखर सूं मेळ खावै तौ उठै आदिमेळ वैणसगाई अलंकार मानीजै। आदि मेळ रौ प्रयोग राजस्थानी काव्य में घणोई होयौ है–

जिण वन भूल न जावता, गैंद गवय गिड़राज।
तिण बन जंबुक ताखड़ा, उधम मंडियौ आज।।

या

रामत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार।
धण सूंपी लूंठा धकै, धरमराज धिक्कार।।

2. मध्यमेळ : किणी चरण रै पैलै सबद रौ पैलौ आखर उणीज चरण रै आखरी सबद रै बीचाळै आवै (मध्य में उणी'ज वरण री आव्रति होवै) तौ उठै मध्यमेळ वैणसगाई कहीजै। दाखलौ–

नाम लियां थी मानवां, सरकै कलुष विसाल।
मह जैसे मेटै तिमिर, रसम परस किरमाल।।
(मंछाराम सेवग)

गरज कियां सूं वागरी, कदे न तजै सिकार।
रटै हरी गुण वारता, कटै कळेस विकार।।
(शक्तिदान कविया)

3. अंतमेळ : किणी चरण रौ पैलौ आखर उणी'ज चरण रै छेलड़ै सबद रौ छेहलौ आखर होवै तौ उठै अंतमेळ वैणसगाई बरतीजै। दाखला–

मरद जिकै संसार में, लखजे जीव विसाल।
रात दिवस रघुनाथ रा, लेवै नाम रसाल।।
(मंछाराम सेवग)

या

निरख्यौ इण संसार नै, लुक छिप रांमत खेल।
मिनख भलां री है कमी, लाख मिलै बिगड़ेल।।
(शक्तिदान कविया)

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. छंदां री व्युत्पत्ति मानीजै–
   (अ) वीर रस सूं (ब) कविता सूं
   (स) कवि री कुसलाई सूं (द) संस्क्रत रा छद् धातु सूं
   ( )

2. छंद री सबसूं महताऊ परिभासा है–
   (अ) स्तुतिपरक काव्य ई छंद है (ब) यति गति रौ जिणमें प्रयोग हुवै वौ छंद है
   (स) वीरता रा बखाण ई छंद है (द) लय, सुर, यति, गति जैड़ा सास्त्रीय नेमां सूं गूंथीज्योड़ी रचना ई छंद है
   ( )

3. अलंकार सूं आप कांई समझौ–
   (अ) काव्य री आत्मा (ब) काव्य रौ धेय
   (स) काव्य री परख (द) काव्य रौ फूटरापौ अर सरसता
   ( )

4. वैणसगाई रौ अरथ कांई है–
   (अ) वरणां रौ मेळ (ब) वरणां री कूंत
   (स) बोलां री सगाई (द) अेक जाति–वरण रै आखरां रौ ओपतौ मेळ
   ( )

5. ''रटै हरिगुण वारता'' में किसौ वैणसगाई बरतीज्यौ है–
   (अ) आखर वैणसगाई (ब) अंत मेळ वैणसगाई
   (स) हरिगुण वैणसगाई (द) मध्य मेळ वैणसगाई
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. छंद री ओपती परिभासा दिरावौ।
2. राजस्थानी छंदसास्त्रीय चावा ग्रंथां रौ नांव अर रचनाकार रौ नांव लिखौ।
3. छंद रै वास्तै काम आवण वाळा दोय नेमां रौ नांव लिखौ।
4. दूहै रा कित्ता भेद साहित्य में बताईज्या है?
5. अलंकार, काव्य रौ कांई गिणीजै?
6. राजस्थानी रौ विसिस्ट अलंकार किसौ है?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. छंदसास्त्र रौ सरूप आपरै सबदां में समझावौ।
2. वैणसगाई सूं आप कांई समझौ? इणरी ओपती परिभासा दिरावौ।
3. राजस्थानी छंदां में कांई–कांई वरणन मिळै? समझावौ।
4. दूहा अर सोरठा में कांई भेद है? समझावौ।
5. अलंकारां रा मैतव नै समझावौ।

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी छंदसास्त्र रा महत्त्व नै आखरां ढाळौ।
2. राजस्थानी छंदां में दूहै री कांई ठौड़ है? इणरै भेदां रा नांव बतावता थकां दूहै–सोरठै री सास्त्रीय परिभासा दाखला साथै दिरावौ।
3. साहित्य में अलंकारां री कांई विसेसता है? अलंकारां में राजस्थानी रा चावा अलंकार वैणसगाई री रूपगत–भेदगत व्याख्या करौ।